قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

وَقَالَ الَّذِيْنَ

पारा - 19

eParah

وَقَالَ	الَّذِيْنَ	لَا يَرْجُوْنَ	لِقَآءَنَا	لَوْلَآ	اُنْزِلَ	عَلَيْنَا
और कहा	उन लोगों ने जो	नहीं वो उम्मीद रखते	हमारी मुलाक़ात की	क्यों नहीं	उतारे गए	हम पर

الْمَلٰٓئِكَةُ	اَوْ	نَرٰى	رَبَّنَا ط	لَقَدِ	اسْتَكْبَرُوْا	فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ
फ़रिश्ते	या	हम देखते	अपने रब को	अलबत्ता तहक़ीक़	उन्होंने तकब्बुर किया	अपने दिलों में

وَعَتَوْ	عُتُوًّا	كَبِيْرًا (21)	يَوْمَ	يَرَوْنَ	الْمَلٰٓئِكَةَ	لَا بُشْرٰى
और उन्होंने सरकशी की	सरकशी	बहुत बड़ी	जिस दिन	वो देखेंगे	फ़रिश्तों को	नहीं कोई ख़ुशख़बरी

يَوْمَئِذٍ	لِّلْمُجْرِمِيْنَ	وَيَقُوْلُوْنَ	حِجْرًا	مَّحْجُوْرًا (22)	وَقَدِمْنَآ
उस दिन	मुजरिमों के लिए	और वो (मुजरिम) कहेंगे	एक आड़ हो	मज़बूत	और आएंगे हम

اِلٰى مَا	عَمِلُوْا	مِنْ عَمَلٍ	فَجَعَلْنٰهُ	هَبَآءً	مَّنْثُوْرًا (23)
तरफ़ उसके जो	उन्होंने अमल किए	कोई भी अमल	तो हम बना देंगे उसे	गुबार	परागंदा

اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ	يَوْمَئِذٍ	خَيْرٌ	مُّسْتَقَرًّا	وَّاَحْسَنُ	مَقِيْلًا (24)
जन्नत वाले	उस दिन	बेहतर होंगे	ठिकाने में	और ज़्यादा अच्छे	दोपहर गुज़ारने की जगह में

وَيَوْمَ	تَشَقَّقُ	السَّمَآءُ	بِالْغَمَامِ	وَنُزِّلَ	الْمَلٰٓئِكَةُ	تَنْزِيْلًا (25)
और जिस दिन	फट जाएगा	आसमान	साथ बादलों के	और उतारे जाएंगे	फ़रिश्ते	उतारा जाना

اَلْمُلْكُ	يَوْمَئِذِنِ	الْحَقُّ	لِلرَّحْمٰنِ ط	وَكَانَ	يَوْمًا	عَلَى الْكٰفِرِيْنَ
बादशाहत	उस दिन	बरहक़ है	रहमान के लिए	और होगा	वो दिन	काफ़िरों पर

عَسِيْرًا (26)	وَيَوْمَ	يَعَضُّ	الظَّالِمُ	عَلٰى يَدَيْهِ	يَقُوْلُ
बहुत सख़्त	और जिस दिन	दांतों से काटेगा	ज़ालिम	अपने दोनों हाथों पर	वो कहेगा

يٰلَيْتَنِي	اتَّخَذْتُ	مَعَ	الرَّسُوْلِ	سَبِيْلًا (27)	يٰوَيْلَتٰى	لَيْتَنِيْ	لَمْ
ऐ काश कि मैं	बना लेता मैं	साथ	रसूल के	कुछ रास्ता	हाय अफ़सोस मुझ पर	काश कि मैं	ना

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بَعْدَ	عَنِ الذِّكْرِ	اَضَلَّنِيْ	لَقَدْ	خَلِيْلًا (28)	فُلَانًا	اَتَّخِذْ
बाद इसके कि	ज़िक्र (क़ुरआन) से	उसने भटका दिया मुझे	अलबत्ता तहक़ीक़	दिली दोस्त	फ़ुलां को	मैं बनाता

وَقَالَ	خَذُوْلًا (29)	لِلْاِنْسَانِ	الشَّيْطٰنُ	وَكَانَ	جَآءَنِيْ ط	اِذْ
और कहेगा	छोड़ देने वाला	इंसान को	शैतान	और है	वो आया मेरे पास	जब

مَهْجُوْرًا (30)	الْقُرْاٰنَ	هٰذَا	اتَّخَذُوْا	قَوْمِي	اِنَّ	يٰرَبِّ	الرَّسُوْلُ
छोड़ा हुआ	क़ुरआन को	इस	बना लिया था	मेरी क़ौम ने	बेशक	ऐ मेरे रब	रसूल

وَكَفٰى	مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ط	عَدُوًّا	لِكُلِّ نَبِيٍّ	جَعَلْنَا	وَكَذٰلِكَ
और काफ़ी है	मुजरिमों में से	दुश्मन	हर नबी के लिए	बनाया हमने	और इसी तरह

لَوْلَا	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	وَقَالَ	وَّنَصِيْرًا (31)	هَادِيًا	بِرَبِّكَ
क्यों नहीं	कुफ़्र किया	उन लोगों ने जिन्होंने	और कहा	और मदद करने वाला	हिदायत देने वाला	आपका रब

بِهٖ	لِنُثَبِّتَ	كَذٰلِكَ ج	وَّاحِدَةً ج	جُمْلَةً	الْقُرْاٰنُ	عَلَيْهِ	نُزِّلَ
साथ उसके	ताकि हम मज़बूत कर दें	इसी तरह	एक ही बार	इकट्ठा	क़ुरआन	उस पर	नाज़िल किया गया

اِلَّا	بِمَثَلٍ	يَاْتُوْنَكَ	وَلَا	تَرْتِيْلًا (32)	وَرَتَّلْنٰهُ	فُؤَادَكَ
मगर	कोई मिसाल	वो लाते आपके पास	और नहीं	ठहर-ठहर कर पढ़ना	और ठहर-ठहर कर पढ़ा हमने उसे	दिल आपका

يُحْشَرُوْنَ	اَلَّذِيْنَ	تَفْسِيْرًا (33) ط	وَاَحْسَنَ	بِالْحَقِّ	جِئْنٰكَ
इकट्ठे किए जाएंगे	वो लोग जो	तफ़सीर/वज़ाहत को	और बेहतरीन	हक़ को	लाते हैं हम आपके पास

وَّاَضَلُّ	مَّكَانًا	شَرٌّ	اُولٰٓئِكَ	اِلٰى جَهَنَّمَ لا	عَلٰى وُجُوْهِهِمْ
और ज़्यादा भटके हुए	मक़ाम के ऐतबार से	बदतरीन हैं	यही लोग	तरफ़ जहन्नम के	अपने चेहरों के बल

ع 3 14 1

مَعَهٗٓ	وَجَعَلْنَا	الْكِتٰبَ	مُوْسَى	اٰتَيْنَا	وَلَقَدْ	سَبِيْلًا (34) ع
साथ उसके	और बनाया हमने	किताब	मूसा को	दी हमने	और अलबत्ता तहक़ीक़	रास्ते के ऐतबार से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الَّذِينَ	إِلَى الْقَوْمِ	اذْهَبَا	فَقُلْنَا	وَزِيرًا ﴿35﴾	هٰرُونَ	أَخَاهُ
जिन्होंने	तरफ़ उस क़ौम के	दोनों जाओ	फिर कहा हमने	मददगार	हारून को	उसके भाई

لَمَّا	نُوحٍ	وَقَوْمَ	تَدْمِيرًا ﴿36﴾	فَدَمَّرْنٰهُمْ	بِآيٰتِنَا	كَذَّبُوا
जब	नूह	और क़ौमे	हलाक करना	तो हलाक कर दिया हमने उन्हें	हमारी आयात को	झुठलाया

وَأَعْتَدْنَا	آيَةً	لِلنَّاسِ	وَجَعَلْنٰهُمْ	أَغْرَقْنٰهُمْ	الرُّسُلَ	كَذَّبُوا
और तैयार कर रखा है हमने	एक निशानी	लोगों के लिए	और बना दिया हमने उन्हें	ग़र्क़ कर दिया हमने उन्हें	रसूलों को	उन्होंने झुठलाया

وَأَصْحٰبَ الرَّسِّ	وَثَمُودَا	وَعَادًا	أَلِيمًا ﴿37﴾	عَذَابًا	لِلظّٰلِمِينَ
और कुएं वाले	और समूद	और आद	दर्दनाक	अज़ाब	ज़ालिमों के लिए

الْأَمْثَالَ	لَهُ	ضَرَبْنَا	وَكُلًّا	كَثِيرًا ﴿38﴾	بَيْنَ ذٰلِكَ	وَقُرُونًا
मिसालें	उसके लिए	बयान कीं हमने	और हर एक को	बहुत सी	दर्मियान उनके	और क़ौमें

الَّتِي	عَلَى الْقَرْيَةِ	أَتَوْا	وَلَقَدْ	تَتْبِيرًا ﴿39﴾	تَبَّرْنَا	وَكُلًّا
जिस पर	उस बस्ती पर	वो आ चुके	और अलबत्ता तहक़ीक़	हलाक करना	हलाक किया हमने	और हर एक को

كَانُوا	بَلْ	يَرَوْنَهَا	يَكُونُوا	أَفَلَمْ	السَّوْءِ	مَطَرَ	أُمْطِرَتْ
थे वो	बल्कि	वो देखते उसे	थे वो	क्या भला नहीं	बुरी	बारिश	बरसाई गई थी

إِلَّا	يَتَّخِذُونَكَ	إِنْ	رَأَوْكَ	وَإِذَا	نُشُورًا ﴿40﴾	لَا يَرْجُونَ
मगर	वो बनाते आपको	नहीं	वो देखते हैं आपको	और जब	जी उठने की	ना वो उम्मीद रखते

كَادَ	إِنْ	رَسُولًا ﴿41﴾	اللّٰهُ	بَعَثَ	الَّذِي	أَهٰذَا	هُزُوًا
वो क़रीब था	बेशक	रसूल बनाकर	अल्लाह ने	भेजा	वो जिसे	क्या ये है	मज़ाक़

عَلَيْهَا	صَبَرْنَا	أَنْ	لَوْلَا	عَنْ آلِهَتِنَا	لَيُضِلُّنَا
उन पर	सब्र करते/जमे रहते हम	ये (बात) कि	अगर ना होती	हमारे इलाहों से	कि वो भटका देता हमें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَضَلُّ	مَنْ	الْعَذَابَ	يَرَوْنَ	حِيْنَ	يَعْلَمُوْنَ	وَسَوْفَ
ज़्यादा भटका हुआ है	कि कौन	अज़ाब	वो देखेंगे	जिस वक़्त	वो जान लेंगे	और अनक़रीब

اَفَاَنْتَ	هَوٰىهُ ؕ	اِلٰهَهٗ	اتَّخَذَ	مَنِ	اَرَءَيْتَ	سَبِيْلًا ﴿42﴾
क्या भला आप	अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को	इलाह अपना	बना लिया	जिसने	क्या देखा आपने (उसे)	रास्ते से

يَسْمَعُوْنَ	اَكْثَرَهُمْ	اَنَّ	تَحْسَبُ	اَمْ	وَكِيْلًا ﴿43﴾ ۙ	عَلَيْهِ	تَكُوْنُ
वो सुनते हैं	अक्सर उनके	कि बेशक	आप समझते हैं	या	ज़िम्मेदार	उस पर	आप होंगे

اَضَلُّ	هُمْ	بَلْ	كَالْاَنْعَامِ	اِلَّا	هُمْ	اِنْ	يَعْقِلُوْنَ ؕ	اَوْ
ज़्यादा भटके हुए हैं	वो	बल्कि	जानवरों की तरह	मगर	वो	नहीं हैं	वो समझते हैं	या

ع 4 10 2

وَلَوْ	الظِّلَّ ۚ	مَدَّ	كَيْفَ	اِلٰى رَبِّكَ	تَرَ	اَلَمْ	سَبِيْلًا ﴿44﴾ ع
और अगर	साये को	उसने फैला दिया	किस तरह	तरफ़ अपने रब के	आपने देखा	क्या नहीं	रास्ते से

دَلِيْلًا ﴿45﴾ ۙ	عَلَيْهِ	الشَّمْسَ	جَعَلْنَا	ثُمَّ	سَاكِنًا ۚ	لَجَعَلَهٗ	شَآءَ
दलील/रहनुमा	उस पर	सूरज को	बनाया हमने	फिर	साकिन/ठहरा हुआ	अलबत्ता वो बना देता उसे	वो चाहता

جَعَلَ	الَّذِىْ	وَهُوَ	يَّسِيْرًا ﴿46﴾	قَبْضًا	اِلَيْنَا	قَبَضْنٰهُ	ثُمَّ
बनाया	जिसने	और वो ही है	आहिस्ता-आहिस्ता	समेटना	अपनी तरफ़	समेट लिया हमने उसे	फिर

نُشُوْرًا ﴿47﴾	النَّهَارَ	وَّجَعَلَ	سُبَاتًا	وَّالنَّوْمَ	لِبَاسًا	الَّيْلَ	لَكُمُ
उठने का वक़्त	दिन को	और उसने बनाया	बाइसे आराम	और नींद को	लिबास	रात को	तुम्हारे लिए

رَحْمَتِهٖ ۚ	بَيْنَ يَدَىْ	بُشْرًا	الرِّيٰحَ	اَرْسَلَ	الَّذِىْٓ	وَهُوَ
अपनी रहमत के	आगे-आगे	ख़ुशख़बरी बनाकर	हवाओं को	भेजा	जिसने	और वो ही है

بَلْدَةً	بِهٖ	لِّنُحْيِۦَ	طَهُوْرًا ﴿48﴾ ۙ	مَآءً	مِنَ السَّمَآءِ	وَاَنْزَلْنَا
शहर	साथ उसके	ताकि हम ज़िंदा करें	पाक	पानी	आसमान से	और उतारा हमने

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كَثِيْرًا (49)	وَّ اَنَاسِيَّ	اَنْعَامًا	خَلَقْنَآ	مِمَّا	وَّنُسْقِيَهٗ	مَّيْتًا
बहुत से	और इंसान	मवेशी	पैदा किए हमने	उनमें से जो	और हम पिलाऐं उसे	मुर्दा को

النَّاسِ	اَكْثَرُ	فَاَبٰى	لِيَذَّكَّرُوْا ۖ	بَيْنَهُمْ	صَرَّفْنٰهُ	وَلَقَدْ
लोगों ने	अक्सर	तो इंकार किया	ताकि वो नसीहत पकड़ें	दर्मियान उनके	फेर-फेर कर लाए हैं हम उसे	और अलबत्ता तहक़ीक़

نَّذِيْرًا ۖ (51)	فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ	لَبَعَثْنَا	شِئْنَا	وَلَوْ	كُفُوْرًا (50)	اِلَّا
एक डराने वाला	हर बस्ती में	अलबत्ता भेज देते हम	चाहते हम	और अगर	नाशुक्री करने के	सिवाए

كَبِيْرًا (52)	جِهَادًا	بِهٖ	وَجَاهِدْهُمْ	الْكٰفِرِيْنَ	تُطِعِ	فَلَا
बहुत बड़ा	जिहाद	साथ इसके	और जिहाद कीजिए उनसे	काफ़िरों की	आप इताअत कीजिए	तो ना

وَّهٰذَا	فُرَاتٌ	عَذْبٌ	هٰذَا	الْبَحْرَيْنِ	مَرَجَ	الَّذِيْ	وَهُوَ
और ये	खुश मज़ा	मीठा है	ये	दो समुन्दरों को	मिला दिया	जिसने	और वो ही है

مَّحْجُوْرًا (53)	وَّحِجْرًا	بَرْزَخًا	بَيْنَهُمَا	وَجَعَلَ	اُجَاجٌ ۚ	مِلْحٌ
मज़बूत	और एक आड़	एक पर्दा	उन दोनों के दर्मियान	और उसने बना दिया	कड़वा	नमकीन है

وَّصِهْرًا ۗ	نَسَبًا	فَجَعَلَهٗ	بَشَرًا	مِنَ الْمَآءِ	خَلَقَ	الَّذِيْ	وَهُوَ
और सुसराल (वाला)	नसब	फिर उसने बना दिया उसे	एक इंसान को	पानी से	पैदा किया	जिसने	और वो ही है

مَا	اللّٰهِ	مِنْ دُوْنِ	وَيَعْبُدُوْنَ	قَدِيْرًا (54)	رَبُّكَ	وَكَانَ
उनकी जो	अल्लाह के	सिवाए	और वो इबादत करते हैं	बहुत क़ुदरत वाला	रब आपका	और है

ظَهِيْرًا (55)	عَلٰى رَبِّهٖ	الْكَافِرُ	وَكَانَ	يَضُرُّهُمْ ۗ	وَلَا	لَا يَنْفَعُهُمْ
मददगार	ख़िलाफ़ अपने रब के	काफ़िर	और है	वो नुक़सान दे सकते हैं उन्हें	और ना	ना वो नफ़ा दे सकते हैं उन्हें

اَسْئَلُكُمْ	مَآ	قُلْ	وَّنَذِيْرًا (56)	مُبَشِّرًا	اِلَّا	اَرْسَلْنٰكَ	وَمَآ
मैं मांगता तुम से	नहीं	कह दीजिए	और डराने वाला (बना कर)	खुशख़बरी देने वाला	मगर	भेजा हमने आपको	और नहीं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلٰى رَبِّهٖ	يَّتَّخِذَ	اَنْ	شَآءَ	مَنْ	اِلَّا	مِنْ اَجْرٍ	عَلَيْهِ
तरफ़ अपने रब के	वो बना ले	कि	चाहे	जो	मगर	कोई अज्र	उस पर

بِحَمْدِهٖ ؕ	وَسَبِّحْ	لَا يَمُوْتُ	الَّذِيْ	عَلَى الْحَيِّ	وَتَوَكَّلْ	سَبِيْلًا ﴿57﴾
साथ उसकी हम्द के	और तस्बीह बयान कीजिए	नहीं मरेगा	वो जो	हमेशा ज़िंदा रहने वाले पर	और तवक्कुल कीजिए	कोई रास्ता

۞

السَّمٰوٰتِ	خَلَقَ	الَّذِيْ	خَبِيْرًا ﴿58﴾ ۚۛ	عِبَادِهٖ	بِذُنُوْبِ	بِهٖ	وَكَفٰى
आसमान	पैदा किए	वो जिसने	ख़ूब बाख़बर होना	अपने बंदों के	गुनाहों से	उसका	और काफ़ी है

اسْتَوٰى	ثُمَّ	فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ	بَيْنَهُمَا	وَمَا	وَالْاَرْضَ
वो बुलंद हुआ	फिर	छः दिनों में	दर्मियान है इन दोनों के	और जो	और ज़मीन

قِيْلَ	وَاِذَا	خَبِيْرًا ﴿59﴾	بِهٖ	فَسْئَلْ	اَلرَّحْمٰنُ	عَلَى الْعَرْشِ ۚۛ
कहा जाता है	और जब	किसी ख़ूब ख़बर रखने वाले से	उसके बारे में	पस पूछिए	जो रहमान है	अर्श पर

لِمَا	اَنَسْجُدُ	الرَّحْمٰنُ ۗ	وَمَا	قَالُوْا	لِلرَّحْمٰنِ	اسْجُدُوْا	لَهُمُ
उसे जो	क्या हम सज्दा करें	रहमान	और क्या है	वो कहते हैं	रहमान को	सज्दा करो	उन्हें

ع 16 5 3 السجدة 7

فِي السَّمَآءِ	جَعَلَ	الَّذِيْ	تَبٰرَكَ	السجدة نُفُوْرًا ﴿60﴾ ع	وَزَادَهُمْ	تَاْمُرُنَا
आसमान में	बनाया	वो जिसने	बहुत बाबरकत है	नफ़रत में	और उसने ज़्यादा कर दिया उन्हें	तुम हुक्म देते हो हमें

الَّذِيْ	وَهُوَ	مُّنِيْرًا ﴿61﴾	وَّقَمَرًا	سِرٰجًا	فِيْهَا	وَّجَعَلَ	بُرُوْجًا
जिसने	और वो ही है	रोशन	और चांद को	चिराग़/सूरज	उसमें	और बनाया	बुर्जों को

اَنْ	اَرَادَ	لِّمَنْ	خِلْفَةً	وَالنَّهَارَ	الَّيْلَ	جَعَلَ
कि	इरादा करे	उसके लिए जो	एक दूसरे के पीछे आने वाला	और दिन को	रात को	बनाया

يَمْشُوْنَ	الَّذِيْنَ	الرَّحْمٰنِ	وَعِبَادُ	شُكُوْرًا ﴿62﴾	اَرَادَ	اَوْ	يَّذَّكَّرَ
चलते हैं	वो हैं जो	रहमान के	और बंदे	शुक्र गुज़ारी का	वो इरादा करे	या	वो नसीहत पकड़े

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سَلٰمًا ﴿63﴾	قَالُوْا	الْجٰهِلُوْنَ	خَاطَبَهُمُ	وَّ اِذَا	هَوْنًا	عَلَى الْاَرْضِ
सलाम	वो कहते हैं	जाहिल लोग	मुख़ातिब होते हैं उनसे	और जब	आहिस्तगी से	ज़मीन पर

يَقُوْلُوْنَ	وَالَّذِيْنَ	وَّ قِيَامًا ﴿64﴾	سُجَّدًا	لِرَبِّهِمْ	يَبِيْتُوْنَ	وَالَّذِيْنَ
कहते हैं	और वो जो	और क़याम करते हुए	सज्दा करते हुए	अपने रब के लिए	रात गुज़ारते हैं	और वो जो

كَانَ	عَذَابَهَا	اِنَّ	جَهَنَّمَ ۖ ق	عَذَابَ	عَنَّا	اصْرِفْ	رَبَّنَا
है	अज़ाब उसका	बेशक	जहन्नम का	अज़ाब	हमसे	फेर दे	ऐ हमारे रब

اِذَآ	وَالَّذِيْنَ	وَّ مُقَامًا ﴿66﴾	مُسْتَقَرًّا	سَآءَتْ	اِنَّهَا	غَرَامًا ﴿65﴾ ۖ ق
जब	और वो लोग	और क़याम गाह	ठिकाना	बहुत बुरा है	बेशक वो	लाज़िम होने वाला

قَوَامًا ﴿67﴾	بَيْنَ ذٰلِكَ	وَ كَانَ	يَقْتُرُوْا	وَلَمْ	يُسْرِفُوْا	لَمْ	اَنْفَقُوْا
मोअतदल (तरीक़ा)	दर्मियान उनके	और होता है	वो बुख़्ल करते हैं	और ना	वो इसराफ़ करते हैं	ना	वो ख़र्च करते हैं

يَقْتُلُوْنَ	وَلَا	اٰخَرَ	اِلٰهًا	اللّٰهِ	مَعَ	لَا يَدْعُوْنَ	وَالَّذِيْنَ
वो क़त्ल करते	और नहीं	दूसरा	इलाह	अल्लाह के	साथ	नहीं वो पुकारते	और वो जो

وَمَنْ	يَزْنُوْنَ ۚ ج	وَلَا	بِالْحَقِّ	اِلَّا	اللّٰهُ	حَرَّمَ	الَّتِيْ	النَّفْسَ
और जो कोई	वो ज़िना करते	और नहीं	साथ हक़ के	मगर	अल्लाह ने	हराम की	वो जो	किसी जान को

يَوْمَ	الْعَذَابُ	لَهُ	يُّضٰعَفْ	اَثَامًا ﴿68﴾ لا	يَلْقَ	ذٰلِكَ	يَّفْعَلْ
दिन	अज़ाब	उसके लिए	दोगुना किया जाएगा	गुनाह (की सज़ा) को	वो पाएगा	ऐसा	करेगा

وَاٰمَنَ	تَابَ	مَنْ	اِلَّا	مُهَانًا ﴿69﴾ ۖ ق	فِيْهٖ	وَيَخْلُدْ	الْقِيٰمَةِ
और वो ईमान लाया	तौबा की	जिसने	मगर	ज़लील होकर	उसमें	और वो हमेशा रहेगा	क़यामत के

حَسَنٰتٍ ط	سَيِّاٰتِهِمْ	اللّٰهُ	يُبَدِّلُ	فَاُولٰٓئِكَ	صَالِحًا	عَمَلًا	وَعَمِلَ
भलाइयों से	उनकी बुराइयों को	अल्लाह	बदल देगा	तो यही लोग हैं	नेक	अमल	और उसने अमल किए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَ كَانَ	اللّٰهُ	غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا (70)	وَ مَنْ	تَابَ	وَ عَمِلَ	صَالِحًا
और है	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला	बहुत रहम करने वाला	और जो कोई	तौबा करे	और वो अमल करे	नेक

فَاِنَّهٗ	يَتُوْبُ	اِلَى اللّٰهِ	مَتَابًا (71)	وَالَّذِيْنَ	لَا يَشْهَدُوْنَ	الزُّوْرَ ۙ
तो बेशक वो	वो पलट आता है	तरफ़ अल्लाह के	पलटना	और वो जो	नहीं वो गवाह बनते	झूठ के

وَ اِذَا	مَرُّوْا	بِاللَّغْوِ	مَرُّوْا	كِرَامًا (72)	وَالَّذِيْنَ	اِذَا	ذُكِّرُوْا
और जब	वो गुज़रते हैं	लग़्व पर	वो गुज़र जाते हैं	इज़्ज़त से	और वो लोग जो	जब	वो नसीहत किए जाते हैं

بِاٰيٰتِ	رَبِّهِمْ	لَمْ	يَخِرُّوْا	عَلَيْهَا	صُمًّا	وَّ عُمْيَانًا (73)	وَالَّذِيْنَ
साथ आयात के	अपने रब की	नहीं	वो गिर पड़ते	उन पर	बहरे	और अंधे बन कर	और वो जो

يَقُوْلُوْنَ	رَبَّنَا	هَبْ	لَنَا	مِنْ اَزْوَاجِنَا	وَ ذُرِّيّٰتِنَا	قُرَّةَ	اَعْيُنٍ
कहते हैं	ऐ हमारे रब	अता कर	हमें	हमारी बीवियों से	और हमारी औलाद से	ठन्डक	आंखों की

وَّ اجْعَلْنَا	لِلْمُتَّقِيْنَ	اِمَامًا (74)	اُولٰٓئِكَ	يُجْزَوْنَ	الْغُرْفَةَ	بِمَا
और बना हमें	मुत्तक़ी लोगों का	इमाम/रहनुमा	यही लोग हैं	जो बदला में दिए जाएंगे	बालाख़ाना	बवजह उसके जो

صَبَرُوْا	وَ يُلَقَّوْنَ	فِيْهَا	تَحِيَّةً	وَّ سَلٰمًا (75) ۙ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ؕ
उन्होंने सब्र किया	और वो इस्तक़बाल किए जाएंगे	उसमें	दुआए ख़ैर	और सलाम से	हमेशा रहने वाले हैं	उसमें

حَسُنَتْ	مُسْتَقَرًّا	وَّ مُقَامًا (76)	قُلْ	مَا	يَعْبَؤُا	بِكُمْ	رَبِّيْ
कितना अच्छा है	ठिकाना	और क़यामगाह	कह दीजिए	ना	परवाह करता	तुम्हारी	रब मेरा

ع 6 17 4

لَوْ لَا	دُعَآؤُكُمْ ۚ	فَقَدْ	كَذَّبْتُمْ	فَسَوْفَ	يَكُوْنُ	لِزَامًا (77) ع
अगर ना होती	दुआ तुम्हारी	तो तहक़ीक़	झुठलाया तुमने	तो अनक़रीब	होगा	चिमट जाने वाला (अज़ाब)

اٰيَاتُهَا: 227 — 26 سُوْرَةُ الشُّعَرَآءِ مَكِّيَّةٌ 47 — رُكُوْعَاتُهَا: 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

منزل 5

بَاخِعٌ	لَعَلَّكَ	الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ②	اٰيٰتُ	تِلْكَ	طٰسٓمٓ ①
हलाक करने वाले हैं	शायद कि आप	वाज़ेह किताब की	आयात हैं	ये	طٰسٓمٓ

عَلَيْهِمْ	نُنَزِّلْ	نَّشَاْ	اِنْ	مُؤْمِنِيْنَ ③	يَكُوْنُوْا	اَلَّا	نَّفْسَكَ
उन पर	हम उतार दें	हम चाहें	अगर	ईमान लाने वाले	हैं वो	कि नहीं	अपनी जान को

وَمَا	خٰضِعِيْنَ ④	لَهَا	اَعْنَاقُهُمْ	فَظَلَّتْ	اٰيَةً	مِّنَ السَّمَآءِ
और नहीं	झुकने वाली	उसके लिए	गर्दनें उनकी	तो हो जाएं	कोई निशानी	आसमान से

عَنْهُ	كَانُوْا	اِلَّا	مُحْدَثٍ	مِّنَ الرَّحْمٰنِ	مِّنْ ذِكْرٍ	يَاْتِيْهِمْ
उससे	वो होते हैं	मगर	नई	रहमान की तरफ़ से	कोई नसीहत	आती उनके पास

كَانُوْا	مَا	اَنْۢبٰٓؤُا	فَسَيَاْتِيْهِمْ	كَذَّبُوْا	فَقَدْ	مُعْرِضِيْنَ ⑤
थे वो	उसकी जो	ख़बरें	तो अनक़रीब आएंगी उनके पास	उन्होंने झुठलाया	पस तहक़ीक़	ऐराज़ करने वाले

اَنْۢبَتْنَا	كَمْ	اِلَى الْاَرْضِ	يَرَوْا	اَوَلَمْ	يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑥	بِهٖ
उगाए हमने	कितने ही	तरफ़ ज़मीन के	उन्होंने देखा	क्या भला नहीं	वो मज़ाक़ उड़ाते	उसका

وَمَا	لَاٰيَةً ؕ	فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	كَرِيْمٍ ⑦	زَوْجٍ	مِنْ كُلِّ	فِيْهَا
और नहीं	अलबत्ता एक निशानी है	उसमें	बेशक	उमदा	जोड़े	हर क़िस्म के	उसमें

الْعَزِيْزُ	لَهُوَ	رَبَّكَ	وَاِنَّ	مُّؤْمِنِيْنَ ⑧	اَكْثَرُهُمْ	كَانَ
बहुत ज़बरदस्त है	अलबत्ता वो	रब आपका	और बेशक	ईमान लाने वाले	अक्सर उनके	हैं

ع 1 9 5

الْقَوْمَ	ائْتِ	اَنِ	مُوْسٰۤى	رَبُّكَ	نَادٰى	وَاِذْ	الرَّحِيْمُ ⑨ ع
उन लोगों की तरफ़	आओ	कि	मूसा को	आपके रब ने	पुकारा	और जब	निहायत रहम करने वाला है

اِنِّيْۤ	رَبِّ	قَالَ	يَتَّقُوْنَ ⑪	اَلَا	فِرْعَوْنَ ؕ	قَوْمَ	الظّٰلِمِيْنَ ⑩ لا
बेशक मैं	ऐ मेरे रब	कहा	वो डरते	क्या नहीं	फ़िरऔन के	क़ौमे	जो ज़ालिम हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَخَافُ	اَنْ	يُّكَذِّبُوْنِ ﴿12﴾ ؕ	وَيَضِيْقُ	صَدْرِىْ	وَلَا	يَنْطَلِقُ	لِسَانِىْ
मैं डरता हूं	कि	वो झुठला देंगे मुझे	और घुटता है	सीना मेरा	और नहीं	चलती	ज़बान मेरी

فَاَرْسِلْ	اِلٰى هٰرُوْنَ ﴿13﴾	وَلَهُمْ	عَلَىَّ	ذَنْۢبٌ	فَاَخَافُ	اَنْ
तो भेज (नबुव्वत)	तरफ़ हारून के	और उनके लिए है	मुझ पर	एक गुनाह	तो मैं डरता हूं	कि

يَّقْتُلُوْنِ ﴿14﴾ ج	قَالَ	كَلَّا ج	فَاذْهَبَا	بِاٰيٰتِنَاۤ	اِنَّا	مَعَكُمْ
वो क़त्ल कर देंगे मुझे	फ़रमाया	हरगिज़ नहीं	पस तुम दोनों जाओ	साथ हमारी निशानियों के	बेशक हम	तुम्हारे साथ

مُّسْتَمِعُوْنَ ﴿15﴾	فَاْتِيَا	فِرْعَوْنَ	فَقُوْلَاۤ	اِنَّا	رَسُوْلُ	رَبِّ
ख़ूब सुनने वाले हैं	फिर दोनों जाओ	फ़िरऔन के पास	तो दोनों कहो	बेशक हम	रसूल हैं	रब्बुल

الْعٰلَمِيْنَ ﴿16﴾ لا	اَنْ	اَرْسِلْ	مَعَنَا	بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿17﴾ ط	قَالَ	اَلَمْ
आलमीन के	ये कि	भेज दो	हमारे साथ	बनी इस्राईल को	उसने कहा	क्या नहीं

نُرَبِّكَ	فِيْنَا	وَلِيْدًا	وَّلَبِثْتَ	فِيْنَا	مِنْ عُمُرِكَ	سِنِيْنَ ﴿18﴾ لا
हमने पाला तुझे	अपने दर्मियान	बच्चा सा	और ठहरा तू	हमारे दर्मियान	अपनी उम्र में से	कई साल

وَفَعَلْتَ	فَعْلَتَكَ	الَّتِىْ	فَعَلْتَ	وَاَنْتَ	مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿19﴾	قَالَ
और किया तू ने	काम अपना	वो जो	किया तू ने	और तू	नाशुक्रों में से है	उसने कहा

فَعَلْتُهَاۤ	اِذًا	وَّاَنَا	مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿20﴾ ط	فَفَرَرْتُ	مِنْكُمْ	لَمَّا
किया मैंने उसे	तब	जब कि मैं	राह भूले हुए लोगों में से था	फिर भाग गया मैं	तुमसे	जब

خِفْتُكُمْ	فَوَهَبَ	لِىْ	رَبِّىْ	حُكْمًا	وَّجَعَلَنِىْ	مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿21﴾
डरा मैं तुमसे	तो अता किया	मुझे	मेरे रब ने	हुक्म	और उसने बनाया मुझे	रसूलों में से

وَتِلْكَ	نِعْمَةٌ	تَمُنُّهَا	عَلَىَّ	اَنْ	عَبَّدْتَّ	بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿22﴾ ط
और यही है	वो एहसान	तुम जतला रहे हो जिसे	मुझ पर	कि	गुलाम बना रखा है तुमने	बनी इस्राईल को

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قَالَ	فِرْعَوْنُ	وَمَا	رَبُّ	الْعٰلَمِيْنَ ۝23 ط	قَالَ	رَبُّ	السَّمٰوٰتِ
कहा	फ़िरऔन ने	और क्या है	रब्बुल	आलमीन	उसने कहा	रब है	आसमानों

وَالْاَرْضِ	وَمَا	بَيْنَهُمَا ط	اِنْ	كُنْتُمْ	مُّوْقِنِيْنَ ۝24	قَالَ
और ज़मीन का	और जो कुछ	दर्मियान है उन दोनों के	अगर	हो तुम	यक़ीन करने वाले	उसने कहा

لِمَنْ	حَوْلَهٗٓ	اَلَا	تَسْتَمِعُوْنَ ۝25	قَالَ	رَبُّكُمْ	وَرَبُّ
उनको जो	उसके इर्द-गिर्द थे	क्या नहीं	तुम ग़ौर से सुनते	उसने कहा	रब तुम्हारा	और रब

اٰبَآئِكُمُ	الْاَوَّلِيْنَ ۝26	قَالَ	اِنَّ	رَسُوْلَكُمُ	الَّذِيْٓ	اُرْسِلَ
तुम्हारे आबा ओ अजदाद का	जो पहले थे	उसने कहा	बेशक	रसूल तुम्हारा	वो जो	भेजा गया

اِلَيْكُمْ	لَمَجْنُوْنٌ ۝27	قَالَ	رَبُّ	الْمَشْرِقِ	وَالْمَغْرِبِ	وَمَا
तरफ़ तुम्हारे	अलबत्ता मजनून है	उसने कहा	रब	मशरिक़	और मग़रिब का	और जो

بَيْنَهُمَا ط	اِنْ	كُنْتُمْ	تَعْقِلُوْنَ ۝28	قَالَ	لَئِنِ	اتَّخَذْتَ
इन दोनों के दर्मियान है	अगर	हो तुम	तुम अक़्ल रखते	कहा	अलबत्ता अगर	बनाया तू ने

اِلٰهًا	غَيْرِيْ	لَاَجْعَلَنَّكَ	مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ۝29	قَالَ	اَوَلَوْ
कोई इलाह	मेरे सिवा	अलबत्ता मैं ज़रूर कर दूंगा तुझे	क़ैदियों में से	उसने कहा	क्या भला अगर

جِئْتُكَ	بِشَيْءٍ	مُّبِيْنٍ ۝30 ج	قَالَ	فَاْتِ	بِهٖٓ	اِنْ	كُنْتَ
लाऊं मैं तेरे पास	कोई चीज़ (दलील)	वाज़ेह	उसने कहा	तो ले आ	उसे	अगर	है तू

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝31	فَاَلْقٰى	عَصَاهُ	فَاِذَا	هِيَ	ثُعْبَانٌ	مُّبِيْنٌ ۝32
सच्चों में से	फिर उसने डाला	असा अपना	तो अचानक	वो	अज़दहा था	सरीह

وَّنَزَعَ	يَدَهٗ	فَاِذَا	هِيَ	بَيْضَآءُ	لِلنّٰظِرِيْنَ ۝33 ع	قَالَ
और उसने खींच लिया	हाथ अपना	तो अचानक	वो	सफ़ेद/चमकता हुआ था	देखने वालों के लिए	कहा

ع 2 24 6

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لِلْمَلَاِ	حَوْلَهٗۤ	اِنَّ	هٰذَا	لَسٰحِرٌ	عَلِيْمٌ (34)	يُّرِيْدُ
सरदारों से	जो उसके इर्द-गिर्द थे	बेशक	ये	अलबत्ता एक जादूगर है	ख़ूब जानने वाला/माहिर	वो चाहता है

اَنْ	يُّخْرِجَكُمْ	مِّنْ اَرْضِكُمْ	بِسِحْرِهٖ	فَمَاذَا	تَاْمُرُوْنَ (35)	قَالُوْۤا
कि	वो निकाल दे तुम्हें	तुम्हारी ज़मीन से	साथ अपने जादू के	तो क्या	तुम हुक्म देते हो	उन्होंने कहा

اَرْجِهْ	وَاَخَاهُ	وَابْعَثْ	فِى الْمَدَآئِنِ	حٰشِرِيْنَ (36)	يَاْتُوْكَ
मोहलत दो उसे	और उसके भाई को	और भेज दो	शहरों में	इकट्ठे करने वाले	वो ले आएंगे तेरे पास

بِكُلِّ	سَحَّارٍ	عَلِيْمٍ (37)	فَجُمِعَ	السَّحَرَةُ	لِمِيْقَاتِ	يَوْمٍ
तमाम	बड़े जादूगर	ख़ूब जानने वाले	तो जमा किए गए	जादूगर	मुक़र्रर वक़्त के लिए	एक दिन

مَّعْلُوْمٍ (38)	وَّقِيْلَ	لِلنَّاسِ	هَلْ	اَنْتُمْ	مُّجْتَمِعُوْنَ (39)	لَعَلَّنَا
मालूम के	और कहा गया	लोगों से	क्या	तुम	जमा होने वाले हो	ताकि हम

نَتَّبِعُ	السَّحَرَةَ	اِنْ	كَانُوْا	هُمُ	الْغٰلِبِيْنَ (40)	فَلَمَّا	جَآءَ
हम पैरवी करें	जादूगरों की	अगर	हों वो	वो ही	ग़ालिब आने वाले	तो जब	आए

السَّحَرَةُ	قَالُوْا	لِفِرْعَوْنَ	اَئِنَّ	لَنَا	لَاَجْرًا	اِنْ	كُنَّا	نَحْنُ
जादूगर	उन्होंने कहा	फ़िरऔन से	क्या बेशक	हमारे लिए	वाक़ई कोई सिला है	अगर	हों हम	हम ही

الْغٰلِبِيْنَ (41)	قَالَ	نَعَمْ	وَاِنَّكُمْ	اِذًا	لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ (42)	قَالَ
ग़ालिब आने वाले	उसने कहा	हां	और बेशक तुम	तब	अलबत्ता मुक़र्रबीन में से होगे	कहा

لَهُمْ	مُّوْسٰٓى	اَلْقُوْا	مَآ	اَنْتُمْ	مُّلْقُوْنَ (43)	فَاَلْقَوْا	حِبَالَهُمْ
उनसे	मूसा ने	डालो	जो	तुम	डालने वाले हो	तो उन्होंने डालीं	रस्सियां अपनी

وَعِصِيَّهُمْ	وَقَالُوْا	بِعِزَّةِ	فِرْعَوْنَ	اِنَّا	لَنَحْنُ	الْغٰلِبُوْنَ (44)
और लाठियां अपनी	और उन्होंने कहा	क़सम है इज़्ज़त	फ़िरऔन की	बेशक हम	अलबत्ता हम ही	ग़ालिब आने वाले हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَاَلْقٰى	مُوْسٰى	عَصَاهُ	فَاِذَا	هِيَ	تَلْقَفُ	مَا	يَاْفِكُوْنَ (45) ج
तो डाली	मूसा ने	लाठी अपनी	तो अचानक	वो	निगल रही थी	उसको जो	वो गढ़ रहे थे

فَاُلْقِيَ	السَّحَرَةُ	سٰجِدِيْنَ (46) لا	قَالُوْٓا	اٰمَنَّا	بِرَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ (47) لا
तो डाल दिए गए	जादूगर	सज्दा करते हुए	उन्होंने कहा	ईमान लाए हम	साथ रब	अल आलमीन के

رَبِّ	مُوْسٰى	وَهٰرُوْنَ (48)	قَالَ	اٰمَنْتُمْ	لَهٗ	قَبْلَ	اَنْ
रब	मूसा	और हारून के	कहा	ईमान लाए तुम	उस पर	इससे पहले	कि

اٰذَنَ	لَكُمْ ج	اِنَّهٗ	لَكَبِيْرُكُمُ	الَّذِيْ	عَلَّمَكُمُ	السِّحْرَ ج
मैं इजाज़त देता	तुम्हें	बेशक वो	अलबत्ता बड़ा है तुम्हारा	जिसने	सिखाया तुम्हें	जादू

فَلَسَوْفَ	تَعْلَمُوْنَ ط	لَاُقَطِّعَنَّ	اَيْدِيَكُمْ	وَاَرْجُلَكُمْ	مِّنْ خِلَافٍ
पस अलबत्ता ज़रूर	तुम जान लोगे	अलबत्ता मैं ज़रूर काट दूंगा	तुम्हारे हाथों को	और तुम्हारे पांवों को	मुख़ालिफ़ सिम्त से

وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ	اَجْمَعِيْنَ (49) ج	قَالُوْا	لَا ضَيْرَ ز	اِنَّآ	اِلٰى رَبِّنَا
और अलबत्ता मैं ज़रूर सूली पर चढ़ाऊंगा तुम्हें	सबके सबको	उन्होंने कहा	नहीं कोई नुक़्सान	बेशक हम	तरफ़ अपने रब के

مُنْقَلِبُوْنَ (50) ج	اِنَّا	نَطْمَعُ	اَنْ	يَّغْفِرَ	لَنَا	رَبُّنَا	خَطٰيٰنَآ
पलटने वाले हैं	बेशक हम	हम उम्मीद रखते हैं	कि	बख़्श देगा	हमारे लिए	हमारा रब	ख़ताऐं हमारी

اَنْ	كُنَّآ	اَوَّلَ	الْمُؤْمِنِيْنَ (51) ع	وَاَوْحَيْنَآ	اِلٰى مُوْسٰٓى	اَنْ
कि	हैं हम	सबसे पहले	ईमान लाने वाले	और वही की हमने	तरफ़ मूसा के	ये कि

ع 3 18 7

اَسْرِ	بِعِبَادِيْٓ	اِنَّكُمْ	مُّتَّبَعُوْنَ (52)	فَاَرْسَلَ	فِرْعَوْنُ	فِي الْمَدَآئِنِ
रात को ले चल	मेरे बंदों को	बेशक तुम	पीछा किए जाने वाले हो	तो भेजा	फ़िरऔन ने	शहरों में

حٰشِرِيْنَ (53) ج	اِنَّ	هٰٓؤُلَآءِ	لَشِرْذِمَةٌ	قَلِيْلُوْنَ (54) لا	وَاِنَّهُمْ	لَنَا
इकट्ठा करने वालों को	बेशक	ये लोग	अलबत्ता एक जमाअत हैं	कम	और बेशक वो	हमें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنْ جَنّٰتٍ	فَاَخْرَجْنٰهُمْ	حٰذِرُوْنَ ﴿56﴾ ؕ	لَجَمِيْعٌ	وَ اِنَّا	لَغَآئِظُوْنَ ﴿55﴾ ۙ
बाग़ात से	तो निकाल दिया हमने उन्हें	मोहतात/होशियार हैं	अलबत्ता सब	और बेशक हम	अलबत्ता ग़ुस्सा दिलाने वाले हैं

وَّ اَوْرَثْنٰهَا	كَذٰلِكَ ؕ	وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿58﴾ ۙ	وَّ كُنُوْزٍ	وَّعُيُوْنٍ ﴿57﴾ ۙ
और वारिस बना दिया हमने उनका	इसी तरह	और उम्दा/नफ़ीस ठिकाने से	और ख़ज़ानों	और चश्मों

تَرَآءَ	فَلَمَّا	مُّشْرِقِيْنَ ﴿60﴾	فَاَتْبَعُوْهُمْ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿59﴾ ؕ
आमने-सामने हुईं	फिर जब	सूरज तुलू होते वक़्त	तो उन्होंने पीछा किया उनका	बनी इस्राईल को

كَلَّا ۚ	قَالَ	لَمُدْرَكُوْنَ ﴿61﴾ ۚ	اِنَّا	مُوْسٰٓى	اَصْحٰبُ	قَالَ	الْجَمْعٰنِ
हरगिज़ नहीं	उसने कहा	अलबत्ता पा लिए जाने वाले हैं	बेशक हम	मूसा के	साथी	कहने लगे	दो जमाअतें

اَنِ	اِلٰى مُوْسٰٓى	فَاَوْحَيْنَآ	سَيَهْدِيْنِ ﴿62﴾	رَبِّيْ	مَعِيَ	اِنَّ
कि	तरफ़ मूसा के	तो वही की हमने	वो ज़रूर रहनुमाई करेगा मेरी	मेरा रब है	मेरे साथ	बेशक

كَالطَّوْدِ	فِرْقٍ	كُلُّ	فَكَانَ	فَانْفَلَقَ	الْبَحْرَ ؕ	بِّعَصَاكَ	اضْرِبْ
जैसे पहाड़	हिस्सा	हर	फिर हो गया	तो वो फट गया	समुन्दर पर	अपने असा को	मारो

وَمَنْ	مُوْسٰى	وَ اَنْجَيْنَا	الْاٰخَرِيْنَ ﴿64﴾ ۚ	ثَمَّ	وَ اَزْلَفْنَا	الْعَظِيْمِ ﴿63﴾ ۚ
और जो	मूसा को	और निजात दी हमने	दूसरों को	उस जगह	और क़रीब कर दिया हमने	बहुत बड़ा

فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	الْاٰخَرِيْنَ ﴿66﴾ ؕ	اَغْرَقْنَا	ثُمَّ	اَجْمَعِيْنَ ﴿65﴾ ۚ	مَّعَهٗٓ
इसमें	बेशक	दूसरों को	ग़र्क़ कर दिया हमने	फिर	सबके सबको	उसके साथ थे

لَهُوَ	رَبَّكَ	وَ اِنَّ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿67﴾	اَكْثَرُهُمْ	كَانَ	وَمَا	لَاٰيَةً ؕ
अलबत्ता वो ही है	रब आपका	और बेशक	ईमान लाने वाले	अक्सर उनके	थे	और ना	अलबत्ता एक निशानी है

ع 4 17 8

قَالَ	اِذْ	اِبْرٰهِيْمَ ﴿69﴾ م	نَبَاَ	عَلَيْهِمْ	وَاتْلُ	الرَّحِيْمُ ﴿68﴾ ع	الْعَزِيْزُ
उसने कहा	जब	इब्राहीम की	ख़बर	इन्हें	और पढ़ सुनाइए	निहायत रहम करने वाला	बहुत ज़बरदस्त

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لِاَبِيْهِ	وَقَوْمِهٖ	مَا	تَعْبُدُوْنَ (70)	قَالُوْا	نَعْبُدُ	اَصْنَامًا
अपने बाप से	और अपनी क़ौम से	किस की	तुम इबादत करते हो	उन्होंने कहा	हम इबादत करते हैं	बुतों की

فَنَظَلُّ	لَهَا	عٰكِفِيْنَ (71)	قَالَ	هَلْ	يَسْمَعُوْنَكُمْ	اِذْ
तो हम हमेशा रहेंगे	उनके लिए	जम कर बैठने वाले	उसने कहा	क्या	वो सुनते हैं तुम्हें	जब

تَدْعُوْنَ (72) لا	اَوْ	يَنْفَعُوْنَكُمْ	اَوْ	يَضُرُّوْنَ (73)	قَالُوْا	بَلْ	وَجَدْنَآ
तुम पुकारते हो	या	वो नफ़ा देते हैं तुम्हें	या	वो नुक़सान देते हैं	उन्होंने कहा	बल्कि	पाया हमने

اٰبَآءَنَا	كَذٰلِكَ	يَفْعَلُوْنَ (74)	قَالَ	اَفَرَءَيْتُمْ	مَّا	كُنْتُمْ
अपने आबा ओ अजदाद को	इसी तरह	वो करते थे	कहा	क्या फिर देखा तुमने	जिनकी	हो तुम

تَعْبُدُوْنَ (75) لا	اَنْتُمْ	وَاٰبَآؤُكُمُ	الْاَقْدَمُوْنَ (76) صلے	فَاِنَّهُمْ	عَدُوٌّ	لِّيْٓ
तुम इबादत करते	तुम	और तुम्हारे आबा ओ अजदाद	पहले	तो बेशक वो	दुश्मन हैं	मेरे

اِلَّا	رَبَّ	الْعٰلَمِيْنَ (77) لا	الَّذِيْ	خَلَقَنِيْ	فَهُوَ	يَهْدِيْنِ (78) لا	وَالَّذِيْ
सिवाए	रब	अल आलमीन के	वो जिसने	पैदा किया मुझे	पस वो	हिदायत देता है मुझे	और वो जो

هُوَ	يُطْعِمُنِيْ	وَيَسْقِيْنِ (79) لا	وَاِذَا	مَرِضْتُ	فَهُوَ	يَشْفِيْنِ (80) صلے
वो ही	वो खिलाता है मुझे	और वो पिलाता है मुझे	और जब	बीमार होता हूं मैं	तो वो ही	वो शिफ़ा देता है मुझे

وَالَّذِيْ	يُمِيْتُنِيْ	ثُمَّ	يُحْيِيْنِ (81) لا	وَالَّذِيْٓ	اَطْمَعُ	اَنْ
और वो जो	मौत देगा मुझे	फिर	वो ज़िंदा करेगा मुझे	और वो जिस से	मैं उम्मीद रखता हूं	कि

يَّغْفِرَ	لِيْ	خَطِيْٓـَٔتِيْ	يَوْمَ	الدِّيْنِ (82) ط	رَبِّ	هَبْ	لِيْ
वो बख़्श देगा	मेरे लिए	ख़ता मेरी	दिन	बदले के	ऐ मेरे रब	अता कर	मुझे

حُكْمًا	وَّاَلْحِقْنِيْ	بِالصّٰلِحِيْنَ (83) لا	وَاجْعَلْ	لِّيْ	لِسَانَ	صِدْقٍ
हुक्म/हिक्मत	और मिला दे मुझे	साथ नेक लोगों के	और बना दे	मेरे लिए	ज़बान/नामवरी	सच्चाई की

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاغۡفِرۡ	النَّعِيۡمِ ﴿85﴾ ۙ	جَنَّةِ	مِنۡ وَّرَثَةِ	وَاجۡعَلۡنِىۡ	فِى الۡاٰخِرِيۡنَ ﴿84﴾ ۙ
और बख़्श दे	नेअमत भरी	जन्नत के	वारिसों में से	और बना दे मुझे	बाद वालों में

يَوۡمَ	تُخۡزِنِىۡ	وَلَا	مِنَ الضَّآلِّيۡنَ ﴿86﴾ ۙ	كَانَ	اِنَّهٗ	لِاَبِىۡۤ
जिस दिन	तू रुस्वा कर मुझे	और ना	गुमराहों में से	है वो	बेशक वो	मेरे बाप को

مَنۡ	اِلَّا	بَنُوۡنَ ﴿88﴾ ۙ	وَّلَا	مَالٌ	لَا يَنۡفَعُ	يَوۡمَ	يُبۡعَثُوۡنَ ﴿87﴾ ۙ
जो	मगर	बेटे	और ना	माल	ना फ़ायदा देगा	जिस दिन	वो उठाए जाएंगे

لِلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿90﴾ ۙ	الۡجَـنَّةُ	وَاُزۡلِفَتِ	سَلِيۡمٍ ﴿89﴾ ؕ	بِقَلۡبٍ	اللّٰهَ	اَتَى
मुत्तक़ी लोगों के लिए	जन्नत	और क़रीब लाई जाएगी	सलामत के	साथ दिल	अल्लाह के पास	आए

كُنۡتُمۡ	اَيۡنَمَا	لَهُمۡ	وَقِيۡلَ	لِلۡغٰوِيۡنَ ﴿91﴾ ۙ	الۡجَحِيۡمُ	وَبُرِّزَتِ
थे तुम	कहां हैं जिनकी	उन्हें	और कहा जाएगा	गुमराहों के लिए	जहन्नम	और ज़ाहिर कर दी जाएगी

يَنۡتَصِرُوۡنَ ﴿93﴾ ؕ	اَوۡ	يَنۡصُرُوۡنَكُمۡ	هَلۡ	اللّٰهِ ؕ	مِنۡ دُوۡنِ	تَعۡبُدُوۡنَ ﴿92﴾ ۙ
वो बदला ले सकते हैं	या	वो मदद कर सकते हैं तुम्हारी	क्या	अल्लाह के	सिवाए	तुम इबादत करते

اِبۡلِيۡسَ	وَجُنُوۡدُ	وَالۡغَاوٗنَ ﴿94﴾ ۙ	هُمۡ	فِيۡهَا	فَكُبۡكِبُوۡا
इब्लीस के	और लश्कर	और बहके हुए लोग	वो	उसमें	तो वो औंधे मुंह गिराए जाएंगे

اِنۡ	تَاللّٰهِ	يَخۡتَصِمُوۡنَ ﴿96﴾ ۙ	فِيۡهَا	وَهُمۡ	قَالُوۡا	اَجۡمَعُوۡنَ ﴿95﴾ ؕ
बेशक	क़सम अल्लाह की	वो झगड़ रहे होंगे	उसमें	जब कि वो	वो कहेंगे	सबके सब

الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿98﴾	بِرَبِّ	نُسَوِّيۡكُمۡ	اِذۡ	مُّبِيۡنٍ ﴿97﴾ ۙ	لَفِىۡ ضَلٰلٍ	كُنَّا
अल आलमीन के	साथ रब	हम बराबर ठहरा रहे थे तुम्हें	जब	खुली-खुली	अलबत्ता गुमराही में	थे हम

مِنۡ شَافِعِيۡنَ ﴿100﴾ ۙ	لَنَا	فَمَا	الۡمُجۡرِمُوۡنَ ﴿99﴾	اِلَّا	اَضَلَّنَاۤ	وَمَاۤ
कोई सिफ़ारिशियों में से	हमारे लिए	तो नहीं	मुजरिमों ने	मगर	गुमराह किया हमें	और नहीं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَنَكُوْنَ	كَرَّةً	لَنَا	اَنَّ	فَلَوْ	حَمِيْمٍ ﴿101﴾	صَدِيْقٍ	وَلَا
तो हम होते	एक बार पलटना	हमारे लिए	ये कि (होता)	पस काश	गहरा	कोई दोस्त	और ना

اَكْثَرُهُمْ	كَانَ	وَمَا	لَاٰيَةً ؕ	فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿102﴾
अक्सर उनके	थे	और ना	अलबत्ता एक निशानी है	उसमें	यक़ीनन	ईमान लाने वालों में से

كَذَّبَتْ	الرَّحِيْمُ ﴿104﴾ ع	الْعَزِيْزُ	لَهُوَ	رَبَّكَ	وَاِنَّ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿103﴾
झुठलाया	निहायत रहम करने वाला है	बहुत ज़बरदस्त है	अलबत्ता वो	रब आपका	और बेशक	ईमान लाने वाले

ع 5 36 9

نُوْحٌ	اَخُوْهُمْ	لَهُمْ	قَالَ	اِذْ	الْمُرْسَلِيْنَ ﴿105﴾ ۚ	نُوْحِ	قَوْمُ
नूह ने	उनके भाई	उन्हें	कहा	जब	रसूलों को	नूह ने	क़ौमे

اللّٰهَ	فَاتَّقُوا	اَمِيْنٌ ﴿107﴾ لا	رَسُوْلٌ	لَكُمْ	اِنِّيْ	تَتَّقُوْنَ ﴿106﴾ ج	اَلَا
अल्लाह से	पस डरो	अमानत दार	रसूल हूं	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	तुम डरते	क्या नहीं

اِلَّا	اَجْرِيَ	اِنْ	مِنْ اَجْرٍ ج	عَلَيْهِ	اَسْئَلُكُمْ	وَمَآ	وَاَطِيْعُوْنِ ﴿108﴾ ج
मगर	अज्र मेरा	नहीं	किसी अज्र का	उस पर	मैं सवाल करता तुमसे	और नहीं	और इताअत करो मेरी

قَالُوْٓا	وَاَطِيْعُوْنِ ﴿110﴾ ط	اللّٰهَ	فَاتَّقُوا	الْعٰلَمِيْنَ ﴿109﴾ ج	رَبِّ	عَلٰى
उन्होंने कहा	और इताअत करो मेरी	अल्लाह से	पस डरो	अल आलमीन के	रब	ऊपर

عِلْمِيْ	وَمَا	قَالَ	الْاَرْذَلُوْنَ ﴿111﴾ ط	وَاتَّبَعَكَ	لَكَ	اَنُؤْمِنُ
इल्म मेरा	और क्या है	उसने कहा	रज़ील/हक़ीर लोगों ने	जबकि पैरवी की है तेरी	तुझ पर	क्या हम ईमान लाऐं

عَلٰى رَبِّيْ	اِلَّا	حِسَابُهُمْ	اِنْ	يَعْمَلُوْنَ ﴿112﴾ ج	كَانُوْا	بِمَا
मेरे रब के ज़िम्मे	मगर	हिसाब उनका	नहीं	वो अमल करते रहते	थे वो	उसके बारे में जो

اَنَا	اِنْ	الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿114﴾ ج	بِطَارِدِ	اَنَا	وَمَآ	تَشْعُرُوْنَ ﴿113﴾ ج	لَوْ
मैं	नहीं हूं	ईमान वालों को	धुतकारने वाला	मैं	और नहीं हूं	तुम शऊर रखते	काश

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يٰنُوْحُ	تَنْتَهِ	لَّمْ	لَئِنْ	قَالُوْا	مُّبِيْنٌ ﴿115﴾ ط	نَذِيْرٌ	اِلَّا
ऐ नूह	तू बाज़ आया	ना	अलबत्ता अगर	उन्होंने कहा	खुल्लम-खुल्ला	डराने वाला	मगर

النصف

كَذَّبُوْنِ ﴿117﴾ ج	قَوْمِيْ	اِنَّ	رَبِّ	قَالَ	مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ﴿116﴾ ط	لَتَكُوْنَنَّ
झुठलाया है मुझे	मेरी क़ौम ने	बेशक	ऐ मेरे रब	कहा	संगसार किए जाने वालों में से	अलबत्ता तू ज़रूर होगा

مَّعِيَ	وَمَنْ	وَّنَجِّنِيْ	فَتْحًا	وَبَيْنَهُمْ	بَيْنِيْ	فَافْتَحْ
मेरे साथ हैं	और उनको जो	और निजात दे मुझे	(हतमी) फ़ैसला	और दर्मियान उनके	दर्मियान मेरे	पस फ़ैसला कर दे

فِي الْفُلْكِ	مَّعَهٗ	وَمَنْ	فَاَنْجَيْنٰهُ	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿118﴾
कश्ती में	उसके साथ थे	और उनको जो	तो निजात दी हमने उसे	ईमान लाने वालों में से

فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	الْبٰقِيْنَ ﴿120﴾ ط	بَعْدُ	اَغْرَقْنَا	ثُمَّ	الْمَشْحُوْنِ ﴿119﴾ ج
इसमें	बेशक	बाक़ी रहने वालों को	उसके बाद	ग़र्क़ कर दिया हमने	फिर	जो भरी हुई थी

لَهُوَ	رَبَّكَ	وَاِنَّ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿121﴾	اَكْثَرُهُمْ	كَانَ	وَمَا	لَاٰيَةً ط
अलबत्ता वो	रब आपका	और बेशक	ईमान लाने वाले	अक्सर उनके	थे	और ना	अलबत्ता एक निशानी है

ع 6 18 10

قَالَ	اِذْ	الْمُرْسَلِيْنَ ﴿123﴾ ج	عَادُ ۨ	كَذَّبَتْ	الرَّحِيْمُ ﴿122﴾ ع	الْعَزِيْزُ
कहा था	जब	रसूलों को	आद ने	झुठलाया	निहायत रहम करने वाला है	बहुत ज़बरदस्त है

رَسُوْلٌ	لَكُمْ	اِنِّيْ	تَتَّقُوْنَ ﴿124﴾ ج	اَلَا	هُوْدٌ	اَخُوْهُمْ	لَهُمْ
एक रसूल हूं	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	तुम डरते	क्या नहीं	हूद ने	उनके भाई	उनसे

عَلَيْهِ	اَسْئَلُكُمْ	وَمَآ	وَاَطِيْعُوْنِ ﴿126﴾ ج	اللّٰهَ	فَاتَّقُوا	اَمِيْنٌ ﴿125﴾ لا
इस पर	मैं सवाल करता तुमसे	और नहीं	और इताअत करो मेरी	अल्लाह से	पस डरो	अमानतदार

اَتَبْنُوْنَ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿127﴾ ط	رَبِّ	عَلٰى	اِلَّا	اَجْرِيَ	اِنْ	مِنْ اَجْرٍ ج
क्या तुम बनाते हो	अल आलमीन के	रब	ऊपर	मगर	अज्र मेरा	नहीं	किसी अज्र का

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِكُلِّ	رِيْعٍ	اٰيَةً	تَعْبَثُوْنَ ﴿128﴾ لا	وَتَتَّخِذُوْنَ	مَصَانِعَ	لَعَلَّكُمْ
हर	ऊंची जगह पर	एक निशानी (यादगार)	अबस/बेकार काम करते हुए	और तुम बनाते हो	महल्लात	शायद कि तुम

تَخْلُدُوْنَ ﴿129﴾ ج	وَاِذَا	بَطَشْتُمْ	بَطَشْتُمْ	جَبَّارِيْنَ ﴿130﴾ ج	فَاتَّقُوا	اللّٰهَ
तुम हमेशा रहोगे	और जब	पकड़ते हो तुम	पकड़ते हो तुम	सरकश हो कर	पस डरो	अल्लाह से

وَاَطِيْعُوْنِ ﴿131﴾ ج	وَاتَّقُوا	الَّذِيْٓ	اَمَدَّكُمْ	بِمَا	تَعْلَمُوْنَ ﴿132﴾ ج	اَمَدَّكُمْ
और इताअत करो मेरी	और डरो	उससे जिसने	मदद की तुम्हारी	साथ उसके जो	तुम जानते हो	उसने मदद की तुम्हारी

بِاَنْعَامٍ	وَّبَنِيْنَ ﴿133﴾ ج	وَجَنّٰتٍ	وَّعُيُوْنٍ ﴿134﴾ ج	اِنِّيْٓ	اَخَافُ	عَلَيْكُمْ
साथ मवेशियों	और बेटों के	और बाग़ों	और चश्मों के	बेशक मैं	मैं डरता हूं	तुम पर

عَذَابَ	يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿135﴾ ط	قَالُوْا	سَوَآءٌ	عَلَيْنَآ	اَوَعَظْتَ	اَمْ
अज़ाब से	बड़े दिन के	उन्होंने कहा	बराबर है	हम पर	ख़्वाह नसीहत करे तू	या

لَمْ	تَكُنْ	مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ﴿136﴾ لا	اِنْ	هٰذَآ	اِلَّا	خُلُقُ	الْاَوَّلِيْنَ ﴿137﴾ لا
ना	तू हो	नसीहत करने वालों में से	नहीं है	ये	मगर	आदत	पहलों की

وَمَا	نَحْنُ	بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿138﴾ ج	فَكَذَّبُوْهُ	فَاَهْلَكْنٰهُمْ ط	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ
और नहीं हैं	हम	अज़ाब दिए जाने वाले	तो उन्होंने झुठलाया उसे	फिर हलाक कर दिया हमने उन्हें	यक़ीनन	इसमें

لَاٰيَةً ط	وَمَا	كَانَ	اَكْثَرُهُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿139﴾	وَاِنَّ	رَبَّكَ	لَهُوَ
अलबत्ता एक निशानी है	और ना	थे	अक्सर उनके	ईमान लाने वाले	और बेशक	रब आपका	अलबत्ता वो

ع 7 18 11

الْعَزِيْزُ	الرَّحِيْمُ ﴿140﴾ ع	كَذَّبَتْ	ثَمُوْدُ	الْمُرْسَلِيْنَ ﴿141﴾ ج	اِذْ	قَالَ
बहुत ज़बरदस्त है	निहायत रहम करने वाला है	झुठलाया	समूद ने	रसूलों को	जब	कहा था

لَهُمْ	اَخُوْهُمْ	صٰلِحٌ	اَلَا	تَتَّقُوْنَ ﴿142﴾ ج	اِنِّيْ	لَكُمْ	رَسُوْلٌ
उनसे	उनके भाई	सालेह ने	क्या नहीं	तुम डरते	बेशक मैं	तुम्हारे लिए	रसूल हूं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَيْهِ	اَسْـَٔلُكُمْ	وَمَآ	وَاَطِيْعُوْنِ ﴿144﴾ ج	اللّٰهَ	فَاتَّقُوا	اَمِيْنٌ ﴿143﴾ لا
इस पर	मैं सवाल करता तुमसे	और नहीं	और इताअत करो मेरी	अल्लाह से	पस डरो	अमानतदार

اَتُتْرَكُوْنَ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿145﴾ ط	رَبِّ	عَلٰى	اِلَّا	اَجْرِيَ	اِنْ	مِنْ اَجْرٍ ج
क्या तुम छोड़ दिए जाओगे	अल आलमीन के	रब	ऊपर	मगर	अज्र मेरा	नहीं	किसी अज्र का

وَّنَخْلٍ	وَّزُرُوْعٍ	وَّعُيُوْنٍ ﴿147﴾ لا	فِيْ جَنّٰتٍ	اٰمِنِيْنَ ﴿146﴾ لا	هٰهُنَآ	فِيْ مَا
और खजूर के दरख़्त	और खेतों में	और चश्मों	बाग़ों में	अमन से रहने वाले	यहां हैं	उनमें जो

فٰرِهِيْنَ ﴿149﴾ ج	بُيُوْتًا	مِنَ الْجِبَالِ	وَتَنْحِتُوْنَ	هَضِيْمٌ ﴿148﴾ ج	طَلْعُهَا
ख़ूब माहिर बन कर	घरों को	पहाड़ों में से	और तुम तराशते हो	नर्म व नाज़ुक	ख़ोशे उनके

الَّذِيْنَ	الْمُسْرِفِيْنَ ﴿151﴾ لا	اَمْرَ	تُطِيْعُوْٓا	وَلَا	وَاَطِيْعُوْنِ ﴿150﴾ ج	اللّٰهَ	فَاتَّقُوا
वो जो	हद से बढ़ने वालों के	हुक्म की	तुम इताअत करो	और ना	और इताअत करो मेरी	अल्लाह से	पस डरो

اَنْتَ	اِنَّمَآ	قَالُوْٓا	يُصْلِحُوْنَ ﴿152﴾	وَلَا	فِي الْاَرْضِ	يُفْسِدُوْنَ
तू	बेशक	उन्होंने कहा	वो इस्लाह करते	और नहीं	ज़मीन में	फ़साद करते हैं

بِاٰيَةٍ	فَاْتِ	مِّثْلُنَا ج صلے	بَشَرٌ	اِلَّا	اَنْتَ	مَآ	مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿153﴾ ج
कोई निशानी	तो ले आ	हमारे जैसा	एक इंसान	मगर	तू	नहीं	सहरज़दा लोगों में से है

شِرْبٌ	لَّهَا	نَاقَةٌ	هٰذِهٖ	قَالَ	مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿154﴾	كُنْتَ	اِنْ
पानी पीने की बारी	उसके लिए है	एक ऊंटनी	ये है	उसने कहा	सच्चों में से	है तू	अगर

بِسُوْٓءٍ	تَمَسُّوْهَا	وَلَا	مَّعْلُوْمٍ ﴿155﴾ ج	يَوْمٍ	شِرْبُ	وَّلَكُمْ
बुराई से	तुम छूना उसे	और ना	मालूम के	दिन	पानी पीने की बारी	और तुम्हारे लिए

فَاَصْبَحُوْا	فَعَقَرُوْهَا	يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿156﴾	عَذَابُ	فَيَاْخُذَكُمْ
तो वो हो गए	तो उन्होंने कूंचें काट डालीं उसकी	बड़े दिन का	अज़ाब	वरना पकड़ लेगा तुम्हें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

نٰدِمِيْنَ ۙ﴿157﴾	فَاَخَذَهُمُ	الْعَذَابُ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً ؕ	وَمَا
नादिम	फिर पकड़ लिया उन्हें	अज़ाब ने	यक़ीनन	इसमें	अलबत्ता एक निशानी है	और ना

كَانَ	اَكْثَرُهُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿158﴾	وَاِنَّ	رَبَّكَ	لَهُوَ	الْعَزِيْزُ
थे	अक्सर उनके	ईमान लाने वाले	और बेशक	रब आपका	अलबत्ता वो	बहुत ज़बरदस्त है

ع 8 19 12

الرَّحِيْمُ ﴿159﴾	كَذَّبَتْ	قَوْمُ	لُوْطِ ِۨ	الْمُرْسَلِيْنَ ۚۖ ﴿160﴾	اِذْ	قَالَ	لَهُمْ
बहुत रहम फ़रमाने वाला है	झुठलाया	क़ौमे	लूत ने	रसूलों को	जब	कहा	उन्हें

اَخُوْهُمْ	لُوْطٌ	اَلَا	تَتَّقُوْنَ ۚ﴿161﴾	اِنِّيْ	لَكُمْ	رَسُوْلٌ	اَمِيْنٌ ۙ﴿162﴾
उनके भाई	लूत ने	क्या नहीं	तुम डरते	बेशक मैं	तुम्हारे लिए	एक रसूल हूं	अमानतदार

فَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَاَطِيْعُوْنِ ۚ﴿163﴾	وَمَآ	اَسْـَٔلُكُمْ	عَلَيْهِ	مِنْ اَجْرٍ ۚ
पस डरो	अल्लाह से	और इताअत करो मेरी	और नहीं	मैं सवाल करता तुमसे	इस पर	किसी अज्र का

اِنْ	اَجْرِيَ	اِلَّا	عَلٰى	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ؕ﴿164﴾	اَتَاْتُوْنَ	الذُّكْرَانَ
नहीं	अज्र मेरा	मगर	ऊपर	रब	अल आलमीन के	क्या तुम आते हो	मर्दों के पास

مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿165﴾	وَتَذَرُوْنَ	مَا	خَلَقَ	لَكُمْ	رَبُّكُمْ
तमाम जहान वालों में से	और तुम छोड़ देते हो	जो	पैदा किया	तुम्हारे लिए	तुम्हारे रब ने

مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ	بَلْ	اَنْتُمْ	قَوْمٌ	عٰدُوْنَ ﴿166﴾	قَالُوْا	لَئِنْ
तुम्हारी बीवियों में से	बल्कि	तुम	लोग हो	हद से गुज़रने वाले	उन्होंने कहा	अलबत्ता अगर

لَّمْ	تَنْتَهِ	يٰلُوْطُ	لَتَكُوْنَنَّ	مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ﴿167﴾	قَالَ	اِنِّيْ
ना	तू बाज़ आया	ऐ लूत	अलबत्ता तू ज़रूर हो जाएगा	निकाले जाने वालों में से	उसने कहा	बेशक मैं

لِعَمَلِكُمْ	مِّنَ الْقَالِيْنَ ؕ﴿168﴾	رَبِّ	نَجِّنِيْ	وَاَهْلِيْ	مِمَّا
तुम्हारे अमल से	बेज़ार होने वालों में से हूं	ऐ मेरे रब	निजात दे मुझे	और मेरे घर वालों को	उससे जो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَعْمَلُوْنَ ﴿169﴾	فَنَجَّيْنٰهُ	وَ اَهْلَهٗٓ	اَجْمَعِيْنَ ﴿170﴾ لا	اِلَّا	عَجُوْزًا
वो अमल करते हैं	तो निजात दी हमने उसे	और उसके घर वालों को	सबके सबको	सिवाए	एक बुढ़िया के

فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿171﴾ ج	ثُمَّ	دَمَّرْنَا	الْاٰخَرِيْنَ ﴿172﴾ ج	وَ اَمْطَرْنَا	عَلَيْهِمْ
जो पीछे रह जाने वालों में थी	फिर	तबाह कर दिया हमने	दूसरों को	और बरसाई हमने	उन पर

مَّطَرًا ج	فَسَآءَ	مَطَرُ	الْمُنْذَرِيْنَ ﴿173﴾	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً ط
एक बारिश	तो बहुत बुरी थी	बारिश	डराए जाने वालों की	यक़ीनन	इसमें	अलबत्ता एक निशानी है

وَ مَا	كَانَ	اَكْثَرُهُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿174﴾	وَ اِنَّ	رَبَّكَ	لَهُوَ
और ना	थे	अक्सर उनके	ईमान लाने वाले	और बेशक	रब आपका	अलबत्ता वो

ع 9 16 13

الْعَزِيْزُ	الرَّحِيْمُ ﴿175﴾ ع	كَذَّبَ	اَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ	الْمُرْسَلِيْنَ ﴿176﴾ ج	اِذْ
बहुत ज़बरदस्त है	निहायत रहम करने वाला है	झुठलाया	ऐका (जंगल) वालों ने	रसूलों को	जब

قَالَ	لَهُمْ	شُعَيْبٌ	اَلَا	تَتَّقُوْنَ ﴿177﴾ ج	اِنِّيْ	لَكُمْ	رَسُوْلٌ
कहा	उन्हें	शुऐब ने	क्या नहीं	तुम डरते	बेशक मैं	तुम्हारे लिए	एक रसूल हूं

اَمِيْنٌ ﴿178﴾ لا	فَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿179﴾ ج	وَ مَآ	اَسْـَٔلُكُمْ	عَلَيْهِ
अमानतदार	पस डरो	अल्लाह से	और इताअत करो मेरी	और नहीं	मैं सवाल करता तुम से	इस पर

مِنْ اَجْرٍ ج	اِنْ	اَجْرِيَ	اِلَّا	عَلٰى	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿180﴾ ط	اَوْفُوا
किसी अज्र का	नहीं	अज्र मेरा	मगर	ऊपर	रब	अल आलमीन के	पूरा करो

الْكَيْلَ	وَلَا	تَكُوْنُوْا	مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿181﴾ ج	وَزِنُوْا	بِالْقِسْطَاسِ
नाप को	और ना	तुम हो जाओ	नुक़सान देने वालों में से	और वज़न करो	साथ तराज़ू

الْمُسْتَقِيْمِ ﴿182﴾ ج	وَلَا	تَبْخَسُوا	النَّاسَ	اَشْيَآءَهُمْ	وَلَا	تَعْثَوْا
सीधी के	और ना	तुम कम करके दो	लोगों को	चीज़ें उनकी	और ना	तुम फ़साद करो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالْجِبِلَّةَ	خَلَقَكُمْ	الَّذِىْ	وَاتَّقُوا	مُفْسِدِيْنَ ﴿183﴾ ج	فِى الْاَرْضِ
और मख़्लूक़	पैदा किया तुम्हें	उससे जिसने	और डरो	मुफ़सिद बन कर	ज़मीन में

اَنْتَ	وَمَآ	مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿185﴾ لا	اَنْتَ	اِنَّمَآ	قَالُوْٓا	الْاَوَّلِيْنَ ﴿184﴾ ط
तू	और नहीं	सहरज़दा लोगों में से है	तू	बेशक	उन्होंने कहा	पहली को

فَاَسْقِطْ	لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿186﴾ ج	نَّظُنُّكَ	وَاِنْ	مِّثْلُنَا	بَشَرٌ	اِلَّا
पस तू गिरा दे	अलबत्ता झूठों में से	हम गुमान करते हैं तुझे	और बेशक	हम जैसा	एक इंसान	मगर

قَالَ	مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿187﴾ ط	كُنْتَ	اِنْ	مِّنَ السَّمَآءِ	كِسَفًا	عَلَيْنَا
उसने कहा	सच्चों में से	है तू	अगर	आसमान से	एक टुकड़ा	हम पर

عَذَابُ	فَاَخَذَهُمْ	فَكَذَّبُوْهُ	تَعْمَلُوْنَ ﴿188﴾	بِمَا	اَعْلَمُ	رَبِّىْٓ
अज़ाब ने	तो पकड़ लिया उन्हें	तो उन्होंने झुठला दिया उसे	तुम अमल करते हो	उसे जो	ज़्यादा जानता है	मेरा रब

فِىْ ذٰلِكَ	اِنَّ	يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿189﴾	عَذَابَ	كَانَ	اِنَّهٗ	الظُّلَّةِ ط	يَوْمِ
उसमें	बेशक	बड़े दिन का	अज़ाब	था	बेशक वो	सायबान के	दिन

رَبَّكَ	وَاِنَّ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿190﴾	اَكْثَرُهُمْ	كَانَ	وَمَا	لَاٰيَةً ط
रब आपका	और बेशक	ईमान लाने वाले	अक्सर उनके	थे	और ना	अलबत्ता एक निशानी है

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿192﴾ ط	لَتَنْزِيْلُ	وَاِنَّهٗ	الرَّحِيْمُ ﴿191﴾ ع	الْعَزِيْزُ	لَهُوَ
रब अल आलमीन की तरफ़ से	अलबत्ता नाज़िल करदा है	और बेशक वो	निहायत रहम करने वाला है	बहुत ज़बरदस्त है	अलबत्ता वो

ع 10 16 14

لِتَكُوْنَ	عَلٰى قَلْبِكَ	الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿193﴾ لا	بِهِ	نَزَلَ
ताकि आप हों	ऊपर आपके दिल के	रूहुल अमीन	उसे लेकर	उतरा

لَفِىْ زُبُرِ	وَاِنَّهٗ	مُّبِيْنٍ ﴿195﴾ ط	عَرَبِىٍّ	بِلِسَانٍ	مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿194﴾ لا
अलबत्ता सहीफ़ों में है	और बेशक वो	वाज़ेह के	अरबी	साथ ज़बान	डराने वालों में से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عُلَمٰٓؤُا	يَّعْلَمَهٗ	اَنْ	اٰيَةً	لَّهُمْ	يَكُنْ	اَوَلَمْ	الْاَوَّلِيْنَ ﴿196﴾
उलेमा	जानते हों उसे	कि	कोई निशानी	उनके लिए	है	क्या भला नहीं	पहलों के

الْاَعْجَمِيْنَ ﴿198﴾ لا	عَلٰى بَعْضِ	نَزَّلْنٰهُ	وَلَوْ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿197﴾ ط
अजमियों में से	किसी पर	नाज़िल करते हम उसे	और अगर	बनी इस्राईल के

سَلَكْنٰهُ	كَذٰلِكَ	مُؤْمِنِيْنَ ﴿199﴾ ط	بِهٖ	كَانُوْا	مَّا	عَلَيْهِمْ	فَقَرَاَهٗ
गुज़ारा हमने उसे	इसी तरह	ईमान लाने वाले	उस पर	होते वो	ना	उन पर	फिर वो पढ़ता उसे

الْعَذَابَ	يَرَوُا	حَتّٰى	بِهٖ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	الْمُجْرِمِيْنَ ﴿200﴾ ط	فِيْ قُلُوْبِ
अज़ाब	वो देख लें	यहां तक कि	इस पर	नहीं वो ईमान लाऐंगे	मुजरिमों के	दिलों में

هَلْ	فَيَقُوْلُوْا	لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿202﴾ لا	وَّهُمْ	بَغْتَةً	فَيَاْتِيَهُمْ	الْاَلِيْمَ ﴿201﴾ لا
क्या	फिर वो कहेंगे	ना वो शऊर रखते होंगे	और वो	अचानक	तो वो आ जाएगा उन पर	दर्दनाक

اِنْ	اَفَرَءَيْتَ	يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿204﴾	اَفَبِعَذَابِنَا	مُنْظَرُوْنَ ﴿203﴾ ط	نَحْنُ
अगर	क्या भला देखा आपने	वो जल्दी मांगते हैं	क्या फिर हमारे अज़ाब को	मोहलत दिए जाने वाले हैं	हम

يُوْعَدُوْنَ ﴿206﴾ لا	كَانُوْا	مَّا	جَآءَهُمْ	ثُمَّ	سِنِيْنَ ﴿205﴾ لا	مَّتَّعْنٰهُمْ
वो वादा दिए जाते	थे वो	जिसका	आ जाए उनके पास	फिर	कई साल	फ़ायदा दें हम उन्हें

اَهْلَكْنَا	وَمَآ	يُمَتَّعُوْنَ ﴿207﴾ ط	كَانُوْا	مَّا	عَنْهُمْ	اَغْنٰى	مَآ
हलाक किया हमने	और नहीं	वो फ़ायदा दिए जाते	थे वो	जो	उन्हें	काम आएगा	ना

ع

كُنَّا	وَمَا	ذِكْرٰى قف	مُنْذِرُوْنَ ﴿208﴾ قلے	لَهَا	اِلَّا	مِنْ قَرْيَةٍ
थे हम	और ना	नसीहत के तौर पर	डराने वाले थे	उसके लिए	मगर	किसी बस्ती को

لَهُمْ	يَنْبَغِيْ	وَمَا	الشَّيٰطِيْنُ ﴿210﴾	بِهٖ	تَنَزَّلَتْ	وَمَا	ظٰلِمِيْنَ ﴿209﴾
उनके	लायक़	और नहीं	शयातीन	उसे लेकर	उतरे	और नहीं	ज़ालिम

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَدْعُ	فَلَا	لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿212﴾ ط	عَنِ السَّمْعِ	اِنَّهُمْ	يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿211﴾ ط	وَمَا
आप पुकारिए	पस ना	अलबत्ता अलग किए हुए हैं	सुनने से	बेशक वो	वो इस्तिताअत रखते	और नहीं

وَاَنْذِرْ	مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿213﴾ ج	فَتَكُوْنَ	اٰخَرَ	اِلٰهًا	اللّٰهِ	مَعَ
और डराइए	अज़ाब दिए जाने वालों में से	वरना आप हो जाएंगे	दूसरा	इलाह	अल्लाह के	साथ

اتَّبَعَكَ	لِمَنِ	جَنَاحَكَ	وَاخْفِضْ	الْاَقْرَبِيْنَ ﴿214﴾ لا	عَشِيْرَتَكَ
पैरवी करे आपकी	वास्ते उसके जो	अपना बाज़ू	और झुका दीजिए	जो क़रीबी हैं	अपने रिश्तेदारों को

مِّمَّا	بَرِيْٓءٌ	اِنِّيْ	فَقُلْ	عَصَوْكَ	فَاِنْ	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿215﴾ ج
उससे जो	बरी उज़ ज़िम्मा हूं	बेशक मैं	तो कह दीजिए	वो नाफ़रमानी करें आपकी	फिर अगर	मोमिनों में से

يَرٰىكَ	الَّذِيْ	الرَّحِيْمِ ﴿217﴾ لا	عَلَى الْعَزِيْزِ	وَتَوَكَّلْ	تَعْمَلُوْنَ ﴿216﴾ ج
देखता है आपको	वो जो	निहायत रहम करने वाले के	ऊपर बहुत ज़बरदस्त	और तवक्कुल कीजिए	तुम अमल कर रहे हो

هُوَ	اِنَّهٗ	فِي السّٰجِدِيْنَ ﴿219﴾	وَتَقَلُّبَكَ	تَقُوْمُ ﴿218﴾ لا	حِيْنَ
वो ही है	बेशक वो	सज्दा करने वालों में	और नक़्ल व हरकत आपकी	आप खड़े होते हैं	जिस वक़्त

الشَّيٰطِيْنُ ﴿221﴾ ط	تَنَزَّلُ	عَلٰى مَنْ	اُنَبِّئُكُمْ	هَلْ	الْعَلِيْمُ ﴿220﴾	السَّمِيْعُ
शयातीन	उतरते हैं	किस पर	मैं बताऊं तुम्हें	क्या	ख़ूब जानने वाला	ख़ूब सुनने वाला

وَاَكْثَرُهُمْ	السَّمْعَ	يُّلْقُوْنَ	اَثِيْمٍ ﴿222﴾ لا	اَفَّاكٍ	كُلِّ	عَلٰى	تَنَزَّلُ
और अक्सर उनके	कानों में (सुनी सुनाई बात)	वो डालते हैं	बहुत गुनाहगार के	बहुत झूठे	हर	ऊपर	उतरते हैं

اَنَّهُمْ	تَرَ	اَلَمْ	الْغَاوٗنَ ﴿224﴾ ط	يَتَّبِعُهُمُ	وَالشُّعَرَآءُ	كٰذِبُوْنَ ﴿223﴾ ط
कि बेशक वो	आपने देखा	क्या नहीं	बहके हुए लोग	पैरवी करते हैं उनकी	और शुअरा	झूठे हैं

لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿226﴾ لا	مَا	يَقُوْلُوْنَ	وَاَنَّهُمْ	يَهِيْمُوْنَ ﴿225﴾ لا	فِيْ كُلِّ وَادٍ
नहीं वो करते	वो जो	वो कहते हैं	और बेशक वो	वो सरगर्दां फिरते हैं	हर वादी में

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلَّا	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	وَذَكَرُوا	اللّٰهَ
सिवाए	उनके जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	और उन्होंने याद किया	अल्लाह को

كَثِيْرًا	وَّانْتَصَرُوْا	مِنْۢ بَعْدِ	مَا	ظُلِمُوْا ط	وَسَيَعْلَمُ
बकसरत	और उन्होंने बदला लिया	बाद इसके	जो	वो ज़ुल्म किए गए	और अनक़रीब जान लेंगे

الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْٓا	اَيَّ	مُنْقَلَبٍ	يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿227﴾ ع	11 ع 36 15
वो जिन्होंने	ज़ुल्म किया	कौन सी	लौटने की जगह	वो लौटेंगे	

اٰيَاتُهَا: 93 — 27 سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ 48 — رُكُوْعَاتُهَا: 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰسٓ قف	تِلْكَ	اٰيٰتُ	الْقُرْاٰنِ	وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ﴿1﴾ لا	هُدًى	وَّبُشْرٰى
طٰسٓ	ये	आयात हैं	क़ुरआन की	और वाज़ेह किताब की	हिदायत	और ख़ुशख़बरी है

لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿2﴾ لا	الَّذِيْنَ	يُقِيْمُوْنَ	الصَّلٰوةَ	وَيُؤْتُوْنَ	الزَّكٰوةَ	وَهُمْ
ईमान लाने वालों के लिए	वो जो	क़ायम करते हैं	नमाज़	और वो अदा करते हैं	ज़कात	और वो

بِالْاٰخِرَةِ	هُمْ	يُوْقِنُوْنَ ﴿3﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِالْاٰخِرَةِ
आख़िरत पर	वो	वो यक़ीन रखते हैं	बेशक	वो जो	नहीं वो ईमान लाते	आख़िरत पर

زَيَّنَّا	لَهُمْ	اَعْمَالَهُمْ	فَهُمْ	يَعْمَهُوْنَ ﴿4﴾ ط	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ
मुज़य्यन कर दिए हमने	उनके लिए	आमाल उनके	तो वो	वो भटकते फिरते हैं	यही लोग हैं	वो जो

لَهُمْ	سُوْٓءُ	الْعَذَابِ	وَهُمْ	فِي الْاٰخِرَةِ	هُمُ	الْاَخْسَرُوْنَ ﴿5﴾
उनके लिए	बुरा	अज़ाब है	और वो	आख़िरत में	वो ही	सबसे ज़्यादा ख़सारे वाले हैं

وَاِنَّكَ	لَتُلَقَّى	الْقُرْاٰنَ	مِنْ لَّدُنْ	حَكِيْمٍ	عَلِيْمٍ ﴿6﴾	اِذْ
और बेशक आप	अलबत्ता आप दिए जाते हैं	क़ुरआन	पास से	बहुत हिक्मत वाले	बहुत इल्म वाले के	जब

الثلثة

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سَاٰتِيْكُمْ	نَارًا ؕ	اٰنَسْتُ	اِنِّيْٓ	لِاَهْلِهٖٓ	مُوْسٰى	قَالَ
अनक़रीब मैं लाऊंगा तुम्हारे पास	एक आग	देखी है मैंने	बेशक मैं	अपने घर वालों से	मूसा ने	कहा

لَّعَلَّكُمْ	قَبَسٍ	بِشِهَابٍ	اٰتِيْكُمْ	اَوْ	بِخَبَرٍ	مِّنْهَا
ताकि तुम	जलता हुआ	एक अंगारा	मैं लाऊंगा तुम्हारे पास	या	कोई ख़बर	उसमें से

مَنْ	بُوْرِكَ	اَنْۢ	نُوْدِيَ	جَآءَهَا	فَلَمَّا	تَصْطَلُوْنَ ⑦
जो	बरकत दिया गया	कि	वो पुकारा गया	वो आया उस (आग) के पास	तो जब	तुम ताप सको

الْعٰلَمِيْنَ ⑧	رَبِّ	اللّٰهِ	وَسُبْحٰنَ	حَوْلَهَا ؕ	وَمَنْ	فِي النَّارِ
तमाम जहानों का	जो रब है	अल्लाह	और पाक है	उसके इर्द-गिर्द है	और जो	आग में है

عَصَاكَ ؕ	وَاَلْقِ	الْحَكِيْمُ ⑨ ۙ	الْعَزِيْزُ	اللّٰهُ	اَنَا	اِنَّهٗٓ	يٰمُوْسٰٓى
लाठी अपनी	और डाल दे	बहुत हिक्मत वाला	निहायत ज़बरदस्त	अल्लाह हूं	मैं ही	बेशक	ऐ मूसा

وَّلَمْ	مُدْبِرًا	وَّلّٰى	جَآنٌّ	كَاَنَّهَا	تَهْتَزُّ	رَاٰهَا	فَلَمَّا
और ना	पीठ फेरते हुए	वो मुंह मोड़ गया	साँप है	गोया कि वो	कि वो हरकत करती है	उसने देखा उसे	तो जब

الْمُرْسَلُوْنَ ⑩ ۖ ق	لَدَيَّ	لَا يَخَافُ	اِنِّيْ	لَا تَخَفْ ۫	يٰمُوْسٰى	يُعَقِّبْ ؕ
रसूल	मेरे पास	नहीं डरा करते	बेशक मैं	ना तुम डरो	ऐ मूसा	उसने पीछे मुड़ कर देखा

فَاِنِّيْ	سُوْٓءٍ	بَعْدَ	حُسْنًۢا	بَدَّلَ	ثُمَّ	ظَلَمَ	مَنْ	اِلَّا
तो बेशक मैं	बुराई के	बाद	नेकी से	उसने बदल दिया	फिर	ज़ुल्म किया	जिसने	मगर

بَيْضَآءَ	تَخْرُجْ	فِيْ جَيْبِكَ	يَدَكَ	وَاَدْخِلْ	رَّحِيْمٌ ⑪	غَفُوْرٌ
सफ़ेद/चमकता हुआ	वो निकलेगा	अपने गिरेबान में	हाथ अपना	और दाख़िल कर दे	निहायत रहम करने वाला हूं	बहुत बख़्शने वाला हूं

اِنَّهُمْ	وَقَوْمِهٖ ؕ	اِلٰى فِرْعَوْنَ	فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ	سُوْٓءٍ ۫	مِنْ غَيْرِ
बेशक वो	और उसकी क़ौम के	तरफ़ फ़िरऔन	नौ निशानियों में से हैं	मर्ज़/तकलीफ़ के	बग़ैर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُبْصِرَةً	اٰيٰتُنَا	جَآءَتْهُمْ	فَلَمَّا	فٰسِقِيْنَ ⑫	قَوْمًا	كَانُوْا
वाज़ेह	निशानियां हमारी	आ गईं उनके पास	तो जब	नाफ़रमान	लोग	हैं वो

وَاسْتَيْقَنَتْهَآ	بِهَا	وَجَحَدُوْا	مُّبِيْنٌ ⑬ ج	سِحْرٌ	هٰذَا	قَالُوْا
हालांकि यक़ीन कर लिया था उसका	उनका	और उन्होंने इंकार किया	खुल्लम-खुल्ला	जादू है	ये	उन्होंने कहा

عَاقِبَةُ	كَانَ	كَيْفَ	فَانْظُرْ	وَّعُلُوًّا ط	ظُلْمًا	اَنْفُسُهُمْ
अंजाम	हुआ	किस तरह	तो देखो	और सरकशी से	ज़ुल्म	उनके दिलों ने

ع 1 14 16

وَقَالَا	عِلْمًا ج	وَسُلَيْمٰنَ	دَاوٗدَ	اٰتَيْنَا	وَلَقَدْ	الْمُفْسِدِيْنَ ⑭ ع
और उन दोनों ने कहा	इल्म	और सुलैमान को	दाऊद	दिया हमने	और अलबत्ता तहक़ीक़	फ़साद करने वालों का

مِّنْ عِبَادِهِ	عَلٰى كَثِيْرٍ	فَضَّلَنَا	الَّذِيْ	لِلّٰهِ	الْحَمْدُ
अपने बंदों में से	अक्सरियत पर	फ़ज़ीलत दी हमें	जिसने	अल्लाह के लिए है	सब तारीफ़

النَّاسُ	يٰٓاَيُّهَا	وَقَالَ	دَاوٗدَ	سُلَيْمٰنُ	وَوَرِثَ	الْمُؤْمِنِيْنَ ⑮
लोगो	ऐ	और उसने कहा	दाऊद का	सुलैमान	और वारिस हुआ	जो ईमान लाने वाले हैं

هٰذَا	اِنَّ	شَيْءٍ ط	مِنْ كُلِّ	وَاُوْتِيْنَا	الطَّيْرِ	مَنْطِقَ	عُلِّمْنَا
ये	बेशक	चीज़ (ज़रूरत की)	हर	और दिए गए हम	परिंदों की	बोली	सिखाए गए हम

مِنَ الْجِنِّ	جُنُوْدُهٗ	لِسُلَيْمٰنَ	وَحُشِرَ	الْمُبِيْنُ ⑯	الْفَضْلُ	لَهُوَ
जिन्नों में से	उसके लश्कर	सुलैमान के लिए	और इकट्ठे किए गए	वाज़ेह	फ़ज़्ल है	अलबत्ता वो

اَتَوْا	اِذَآ	حَتّٰٓى	يُوْزَعُوْنَ ⑰	فَهُمْ	وَالطَّيْرِ	وَالْاِنْسِ
वो आए	जब	यहां तक कि	वो गिरोहों में तक़सीम किए जाते हैं	तो वो	और परिंदों में से	और इंसानों

ادْخُلُوْا	النَّمْلُ	يٰٓاَيُّهَا	نَمْلَةٌ	قَالَتْ	النَّمْلِ لا	عَلٰى وَادِ
दाख़िल हो जाओ	चीटियों	ऐ	एक चींटी	कहने लगी	चीटियों की	वादी पर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَسٰكِنَكُمْ ج	لَا يَحْطِمَنَّكُمْ	سُلَيْمٰنُ	وَجُنُوْدُهٗ لا	وَهُمْ	لَا يَشْعُرُوْنَ ⑱
अपने घरों में	ना कुचल डालें तुम्हें	सुलैमान	और लश्कर उसके	और वो	वो शऊर ना रखते हों

فَتَبَسَّمَ	ضَاحِكًا	مِّنْ قَوْلِهَا	وَقَالَ	رَبِّ	اَوْزِعْنِیْٓ	اَنْ
तो वो मुस्कुरा दिया	हंसते हुए	उसकी बात से	और उसने कहा	ऐ मेरे रब	तौफ़ीक़ दे मुझे	कि

اَشْكُرَ	نِعْمَتَكَ	الَّتِیْٓ	اَنْعَمْتَ	عَلَیَّ	وَعَلٰى	وَالِدَیَّ	وَاَنْ
मैं शुक्र अदा करूं	तेरी नेअमत का	वो जो	इनआम की तू ने	मुझ पर	और ऊपर	मेरे वालिदैन के	और ये कि

اَعْمَلَ	صَالِحًا	تَرْضٰىهُ	وَاَدْخِلْنِیْ	بِرَحْمَتِكَ	فِیْ عِبَادِكَ
मैं अमल करूं	नेक	तू राज़ी हो जाए जिससे	और दाख़िल कर मुझे	साथ अपनी रहमत के	अपने बंदों में

الصّٰلِحِیْنَ ⑲	وَتَفَقَّدَ	الطَّیْرَ	فَقَالَ	مَا	لِیَ	لَآ اَرَى	الْهُدْهُدَ ز صلے
जो नेक हैं	और उसने जायज़ा लिया	परिंदों का	फिर कहा	क्या है	मुझे	नहीं मैं देखता	हुदहुद को

اَمْ	كَانَ	مِنَ الْغَآئِبِیْنَ ⑳	لَاُعَذِّبَنَّهٗ	عَذَابًا	شَدِیْدًا	اَوْ
या	है वो	ग़ायब होने वालों में से	अलबत्ता मैं ज़रूर सज़ा दूं गा उसे	सज़ा	शदीद	या

لَاَاذْبَحَنَّهٗٓ	اَوْ	لَیَاْتِیَنِّیْ	بِسُلْطٰنٍ	مُّبِیْنٍ ㉑	فَمَكَثَ
अलबत्ता मैं ज़रूर ज़िबह करुं गा उसे	या	अलबत्ता वो ज़रूर लाए मेरे पास	कोई दलील	वाज़ेह	तो वो ठहरा

غَیْرَ بَعِیْدٍ	فَقَالَ	اَحَطْتُّ	بِمَا	لَمْ	تُحِطْ	بِهٖ
थोड़ी देर	तो कहा (हुदहुद ने)	अहाता किया मैंने	उसका जो	नहीं	आपने अहाता किया	जिसका

وَجِئْتُكَ	مِنْ سَبَاٍ	بِنَبَاٍ	یَّقِیْنٍ ㉒	اِنِّیْ	وَجَدْتُّ	امْرَاَةً
और लाया हूं मैं आपके पास	सबा से	एक ख़बर	यक़ीनी	बेशक मैं	पाया मैंने	एक औरत को

تَمْلِكُهُمْ	وَاُوْتِیَتْ	مِنْ كُلِّ	شَیْءٍ	وَّلَهَا	عَرْشٌ	عَظِیْمٌ ㉓
वो हुक्मरानी करती है उन पर	और वो दी गई है	हर	चीज़ (ज़रूरत की)	और उसके लिए	तख़्त है	बहुत बड़ा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَ زَيَّنَ	اللّٰهِ	مِنْ دُوْنِ	لِلشَّمْسِ	يَسْجُدُوْنَ	وَقَوْمَهَا	وَجَدْتُّهَا
और मुज़य्यन कर दिए	अल्लाह के	सिवाए	सूरज को	वो सज्दा करते हैं	और उसकी क़ौम को	पाया मैंने उसे

فَهُمْ	عَنِ السَّبِيْلِ	فَصَدَّهُمْ	اَعْمَالَهُمْ	الشَّيْطٰنُ	لَهُمُ
पस वो	(सीधे) रास्ते से	फिर उसने रोक दिया उन्हें	आमाल उनके	शैतान ने	उनके लिए

الْخَبْءَ	يُخْرِجُ	الَّذِىْ	لِلّٰهِ	يَسْجُدُوْا	اَلَّا	لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿24﴾ ۙ
छुपी चीज़ को	निकालता है	वो जो	अल्लाह के लिए	वो सज्दा करते	ये कि नहीं	नहीं वो हिदायत पाते

تُعْلِنُوْنَ ﴿25﴾	وَمَا	تُخْفُوْنَ	مَا	وَيَعْلَمُ	وَالْاَرْضِ	فِى السَّمٰوٰتِ
तुम ज़ाहिर करते हो	और जो कुछ	तुम छुपाते हो	जो कुछ	और वो जानता है	और ज़मीन में	आसमानों में

السجدة 8

قَالَ	السجدة الْعَظِيْمِ ﴿26﴾	الْعَرْشِ	رَبُّ	هُوَ	اِلَّا	اِلٰهَ	لَآ	اَللّٰهُ
उसने कहा	अज़ीम का	अर्श	रब है	वो ही	मगर	कोई इलाह (बरहक़)	नहीं	अल्लाह

بِّكِتٰبِىْ	اِذْهَبْ	مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿27﴾	كُنْتَ	اَمْ	اَصَدَقْتَ	سَنَنْظُرُ
ख़त मेरा	ले जाओ	झूठों में से	है तू	या	क्या सच कहा तू ने	अनक़रीब हम देखेंगे

مَاذَا	فَانْظُرْ	عَنْهُمْ	تَوَلَّ	ثُمَّ	اِلَيْهِمْ	فَاَلْقِهْ	هٰذَا
क्या कुछ	फिर देखो	उनसे	हट जाओ	फिर	तरफ़ उनके	फिर डाल दो इसे	ये

كِتٰبٌ	اِلَىَّ	اُلْقِىَ	اِنِّىْٓ	الْمَلَؤُا	يٰٓاَيُّهَا	قَالَتْ	يَرْجِعُوْنَ ﴿28﴾
एक ख़त	मेरी तरफ़	डाला गया	बेशक मैं	सरदारो	ऐ	बोली (मलका)	वो जवाब देते हैं

الرَّحْمٰنِ	اللّٰهِ	بِسْمِ	وَاِنَّهٗ	مِنْ سُلَيْمٰنَ	اِنَّهٗ	كَرِيْمٌ ﴿29﴾
जो बड़ा मेहरबान	अल्लाह के है	साथ नाम	और बेशक वो	सुलैमान की तरफ़ से है	बेशक वो	मुअज़्ज़िज़

ع 2 17 17

قَالَتْ	مُسْلِمِيْنَ ﴿31﴾ ع	وَاْتُوْنِىْ	عَلَىَّ	تَعْلُوْا	اَلَّا	الرَّحِيْمِ ﴿30﴾ ۙ
वो कहने लगी	फ़रमांबरदार बन कर	और आ जाओ मेरे पास	मुझ पर	तुम सरकशी करो	कि ना	निहायत रहम करने वाला है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يٰٓاَيُّهَا	الْمَلَؤُا	اَفْتُوْنِيْ	فِيْٓ اَمْرِيْ ج	مَا	كُنْتُ	قَاطِعَةً	اَمْرًا
ऐ	सरदारो	जवाब दो मुझे	मेरे मामले में	नहीं	हूं मैं	क़तई फ़ैसला करने वाली	किसी काम का

حَتّٰى	تَشْهَدُوْنِ (32)	قَالُوْا	نَحْنُ	اُولُوْا قُوَّةٍ	وَّاُولُوْا بَاْسٍ
यहां तक कि	तुम मौजूद हो मेरे पास	उन्होंने कहा	हम	क़ुव्वत वाले हैं	और जंगजू हैं

شَدِيْدٍ ۙ	وَّالْاَمْرُ	اِلَيْكِ	فَانْظُرِيْ	مَاذَا	تَاْمُرِيْنَ (33)	قَالَتْ
सख़्त	और फ़ैसला	तुम्हारी तरफ़ है	तो देख लो/ग़ौर कर लो	क्या	तुम हुक्म देती हो	वो कहने लगी

اِنَّ	الْمُلُوْكَ	اِذَا	دَخَلُوْا	قَرْيَةً	اَفْسَدُوْهَا	وَجَعَلُوْٓا
बेशक	बादशाह	जब	वो दाख़िल होते हैं	किसी बस्ती में	वो तबाह कर देते हैं उसे	और वो कर देते हैं

اَعِزَّةَ اَهْلِهَآ	اَذِلَّةً ج	وَكَذٰلِكَ	يَفْعَلُوْنَ (34)	وَاِنِّيْ	مُرْسِلَةٌ
उसके मुअज़्ज़िज़ बाशिंदों को	ज़लील	और इसी तरह	ये करेंगे	और बेशक मैं	भेजने वाली हूं

اِلَيْهِمْ	بِهَدِيَّةٍ	فَنٰظِرَةٌ ۢ	بِمَ	يَرْجِعُ	الْمُرْسَلُوْنَ (35)	فَلَمَّا
तरफ़ उनके	एक हदिया	फिर देखने वाली हूं	साथ किस चीज़ के	लौटते हैं	भेजे हुए (क़ासिद)	तो जब

جَآءَ	سُلَيْمٰنَ	قَالَ	اَتُمِدُّوْنَنِ	بِمَالٍ ز	فَمَآ	اٰتٰىنِ َۦ	اللّٰهُ
वो आया	सुलैमान के पास	उसने कहा	क्या तुम मदद देते हो मुझे	साथ माल के	तो जो	अता किया मुझे	अल्लाह ने

خَيْرٌ	مِّمَّآ	اٰتٰىكُمْ ج	بَلْ	اَنْتُمْ	بِهَدِيَّتِكُمْ	تَفْرَحُوْنَ (36)
बेहतर है	उससे जो	उसने अता किया तुम्हें	बल्कि	तुम ही	साथ अपने हदिये के	तुम ख़ुश होते हो

اِرْجِعْ	اِلَيْهِمْ	فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ	بِجُنُوْدٍ	لَّا قِبَلَ	لَهُمْ	بِهَا
लौट जाओ	उनकी तरफ़	पस अलबत्ता हम ज़रूर लाएंगे उनके पास	ऐसे लश्करों को	नहीं कोई मुक़ाबला	उनके लिए	उनका

وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ	مِّنْهَآ	اَذِلَّةً	وَّهُمْ	صٰغِرُوْنَ (37)	قَالَ	يٰٓاَيُّهَا
और अलबत्ता हम ज़रूर निकाल देंगे उन्हें	उससे	ज़लील करके	इस हाल में कि वो	ख़्वार होंगे	कहा	ऐ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْمَلَؤُا	اَيُّكُمْ	يَاْتِيْنِىْ	بِعَرْشِهَا	قَبْلَ	اَنْ	يَّاْتُوْنِىْ
सरदारो	कौन तुम में से	लाएगा मेरे पास	तख़्त उसका	इससे पहले	कि	वो आ जाएं मेरे पास

مُسْلِمِيْنَ (38)	قَالَ	عِفْرِيْتٌ	مِّنَ الْجِنِّ	اَنَا	اٰتِيْكَ	بِهٖ	قَبْلَ
फ़रमांबरदार बन कर	कहा	एक देव ने	जिन्नों में से	मैं	मैं ले आऊंगा आपके पास	उसे	इससे क़ब्ल

اَنْ	تَقُوْمَ	مِنْ مَّقَامِكَ ج	وَاِنِّىْ	عَلَيْهِ	لَقَوِىٌّ	اَمِيْنٌ (39)
कि	आप खड़े हों	अपनी जगह से	और बेशक मैं	इस पर	अलबत्ता कुव्वत रखने वाला	बहुत अमानतदार हूं

قَالَ	الَّذِىْ	عِنْدَهٗ	عِلْمٌ	مِّنَ الْكِتٰبِ	اَنَا	اٰتِيْكَ	بِهٖ
कहा	उसने	जिसके पास	इल्म था	किताब का	मैं	मैं ले आऊंगा आपके पास	उसे

قَبْلَ	اَنْ	يَّرْتَدَّ	اِلَيْكَ	طَرْفُكَ ط	فَلَمَّا	رَاٰهُ	مُسْتَقِرًّا
इससे पहले	कि	लौटे	आपकी तरफ़	नज़र आपकी	फिर जब	उसने देखा उसे	रखा हुआ

عِنْدَهٗ	قَالَ	هٰذَا	مِنْ فَضْلِ	رَبِّىْ قف	لِيَبْلُوَنِىْ	ءَاَشْكُرُ	اَمْ
अपने पास	उसने कहा	ये	फ़ज़्ल से है	मेरे रब के	ताकि वो आज़माए मुझे	क्या मैं शुक्र करता हूं	या

اَكْفُرُ ط	وَمَنْ	شَكَرَ	فَاِنَّمَا	يَشْكُرُ	لِنَفْسِهٖ ج	وَمَنْ	كَفَرَ
मैं नाशुक्री करता हूं	और जिसने	शुक्र किया	तो यक़ीनन	वो शुक्र करेगा	अपने ही लिए	और जिसने	कुफ़्र किया

فَاِنَّ	رَبِّىْ	غَنِىٌّ	كَرِيْمٌ (40)	قَالَ	نَكِّرُوْا	لَهَا	عَرْشَهَا
तो यक़ीनन	मेरा रब	बहुत बेनियाज़ है	निहायत इज़्ज़त वाला है	उसने कहा	अंजाना कर दो	उसके लिए	तख़्त उसका

نَنْظُرْ	اَتَهْتَدِىْۤ	اَمْ	تَكُوْنُ	مِنَ الَّذِيْنَ	لَا يَهْتَدُوْنَ (41)	فَلَمَّا
हम देखते हैं	क्या वो हिदायत पाती है	या	होती है वो	उनमें से जो	नहीं वो हिदायत पाते	तो जब

جَآءَتْ	قِيْلَ	اَهٰكَذَا	عَرْشُكِ ط	قَالَتْ	كَاَنَّهٗ	هُوَ ج	وَاُوْتِيْنَا
वो आ गई	कहा गया	क्या इसी तरह का है	तख़्त तेरा	वो बोली	गोया कि वो	वो ही है	और दिए गए थे हम

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْعِلْمَ	مِنْ قَبْلِهَا	وَكُنَّا	مُسْلِمِيْنَ ﴿42﴾	وَصَدَّهَا	مَا	كَانَتْ
इल्म	इससे पहले ही	और थे हम	फ़रमांबरदार	और रोक रखा था उसे	जिसकी	थी वो

تَّعْبُدُ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ ؕ	اِنَّهَا	كَانَتْ	مِنْ قَوْمٍ	كٰفِرِيْنَ ﴿43﴾	قِيْلَ
वो इबादत करती	सिवाए	अल्लाह के	बेशक वो	थी वो	क़ौम से	काफ़िरों की	कहा गया

لَهَا	ادْخُلِي	الصَّرْحَ ج	فَلَمَّا	رَاَتْهُ	حَسِبَتْهُ	لُجَّةً	وَّكَشَفَتْ
उसे	दाख़िल हो जाओ	महल में	तो जब	उसने देखा उसे	वो समझी उसे	गहरा पानी	और उसने खोल दीं

عَنْ سَاقَيْهَا ؕ	قَالَ	اِنَّهٗ	صَرْحٌ	مُّمَرَّدٌ	مِّنْ قَوَارِيْرَ ۬ؕ	قَالَتْ
पिंडलियां अपनी	उसने कहा	बेशक वो	महल है	चिकना	शीशों से (बनाया गया)	वो कहने लगी

رَبِّ	اِنِّيْ	ظَلَمْتُ	نَفْسِيْ	وَاَسْلَمْتُ	مَعَ	سُلَيْمٰنَ	لِلّٰهِ
ऐ मेरे रब	बेशक मैं	ज़ुल्म किया मैंने	अपनी जान पर	और इस्लाम ले आई मैं	साथ	सुलैमान के	अल्लाह के लिए

رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿44﴾ ع	وَلَقَدْ	اَرْسَلْنَآ	اِلٰى ثَمُوْدَ	اَخَاهُمْ	صٰلِحًا
जो रब है	तमाम जहानों का	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजा हमने	तरफ़ समूद के	उनके भाई	सालेह को

ع 3 13 18

اَنِ	اعْبُدُوا	اللّٰهَ	فَاِذَا	هُمْ	فَرِيْقٰنِ	يَخْتَصِمُوْنَ ﴿45﴾	قَالَ
कि	इबादत करो	अल्लाह की	तो यकायक	वो	दो फ़रीक़ होकर	वो झगड़ रहे थे	उसने कहा

يٰقَوْمِ	لِمَ	تَسْتَعْجِلُوْنَ	بِالسَّيِّئَةِ	قَبْلَ	الْحَسَنَةِ ج	لَوْلَا
ऐ मेरी क़ौम	क्यों	तुम जल्दी मांगते हो	बुराई को	क़ब्ल	भलाई से	क्यों नहीं

تَسْتَغْفِرُوْنَ	اللّٰهَ	لَعَلَّكُمْ	تُرْحَمُوْنَ ﴿46﴾	قَالُوا	اطَّيَّرْنَا	بِكَ
तुम बख़्शिश मांगते	अल्लाह से	ताकि तुम	तुम रहम किए जाओ	उन्होंने कहा	बुरा शगून लिया हमने	तुझसे

وَبِمَنْ	مَّعَكَ ؕ	قَالَ	طٰٓئِرُكُمْ	عِنْدَ اللّٰهِ	بَلْ	اَنْتُمْ	قَوْمٌ
और उनसे जो	साथ हैं तेरे	कहा	बदशगूनी तुम्हारी	अल्लाह के पास है	बल्कि	तुम	ऐसे लोग हो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تُفْتَنُوْنَ (47)	وَكَانَ	فِي الْمَدِيْنَةِ	تِسْعَةُ	رَهْطٍ	يُّفْسِدُوْنَ
तुम आज़माए जा रहे हो	और थे	शहर में	नौ	गिरोह	वो फ़साद करते थे

فِي الْاَرْضِ	وَلَا	يُصْلِحُوْنَ (48)	قَالُوْا	تَقَاسَمُوْا	بِاللّٰهِ
ज़मीन में	और ना	वो इस्लाह करते थे	उन्होंने कहा	आपस में क़सम खाओ	अल्लाह की

لَنُبَيِّتَنَّهٗ	وَاَهْلَهٗ	ثُمَّ	لَنَقُوْلَنَّ	لِوَلِيِّهٖ	مَا	شَهِدْنَا
अलबत्ता हम ज़रूर रात को हमला करेंगे उस पर	और उसके घर वालों पर	फिर	अलबत्ता हम ज़रूर कहेंगे	उसके सरपरस्त से	नहीं	मौजूद थे हम

مَهْلِكَ	اَهْلِهٖ	وَاِنَّا	لَصٰدِقُوْنَ (49)	وَمَكَرُوْا	مَكْرًا	وَّمَكَرْنَا
हलाकत के वक़्त	उसके ख़ानदान की	और बेशक हम	अलबत्ता सच्चे हैं	और उन्होंने चाल चली	एक चाल	और तदबीर की हमने

مَكْرًا	وَّهُمْ	لَا يَشْعُرُوْنَ (50)	فَانْظُرْ	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ	مَكْرِهِمْ ۙ
एक तदबीर	और वो	ना वो शऊर रखते थे	पस देखिए	कैसा	हुआ	अंजाम	उनकी चाल का

اَنَّا	دَمَّرْنٰهُمْ	وَقَوْمَهُمْ	اَجْمَعِيْنَ (51)	فَتِلْكَ	بُيُوْتُهُمْ	خَاوِيَةًۢ
बेशक हम	तबाह कर दिया हमने उन्हें	और उनकी क़ौम को	सबके सबको	तो ये	उनके घर हैं	गिरे हुए

بِمَا	ظَلَمُوْا ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً	لِّقَوْمٍ	يَّعْلَمُوْنَ (52)
बवजह उसके जो	उन्होंने ज़ुल्म किया	यक़ीनन	इसमें	अलबत्ता एक निशानी है	उन लोगों के लिए	जो इल्म रखते हैं

وَاَنْجَيْنَا	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَكَانُوْا	يَتَّقُوْنَ (53)	وَلُوْطًا	اِذْ	قَالَ
और निजात दी हमने	उन्हें जो	ईमान लाए	और थे वो	वो डरते	और लूत को	जब	उसने कहा

لِقَوْمِهٖٓ	اَتَاْتُوْنَ	الْفَاحِشَةَ	وَاَنْتُمْ	تُبْصِرُوْنَ (54)	اَئِنَّكُمْ	لَتَاْتُوْنَ
अपनी क़ौम से	क्या तुम आते हो	बेहयाई को	हालांकि तुम	तुम देखते हो	क्या बेशक तुम	अलबत्ता तुम आते हो

الرِّجَالَ	شَهْوَةً	مِّنْ دُوْنِ	النِّسَآءِ ؕ	بَلْ	اَنْتُمْ	قَوْمٌ	تَجْهَلُوْنَ (55)
मर्दों के पास	शहवत के लिए	इलावा	औरतों के	बल्कि	तुम	एक क़ौम हो	तुम जहालत बरतते हो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَمَا	كَانَ	جَوَابَ	قَوْمِهٖٓ	اِلَّآ	اَنْ	قَالُوْٓا	اَخْرِجُوْٓا	اٰلَ لُوْطٍ
तो ना	था	जवाब	उसकी क़ौम का	मगर	ये कि	उन्होंने कहा	निकाल दो	आले लूत को

مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ج	اِنَّهُمْ	اُنَاسٌ	يَّتَطَهَّرُوْنَ (56)	فَاَنْجَيْنٰهُ	وَاَهْلَهٗٓ
अपनी बस्ती से	बेशक वो	लोग	वो बहुत पाकबाज़ बनते हैं	तो निजात दी हमने उसे	और उसके घर वालों को

اِلَّا	امْرَاَتَهٗ ز	قَدَّرْنٰهَا	مِنَ الْغٰبِرِيْنَ (57)	وَاَمْطَرْنَا	عَلَيْهِمْ
सिवाए	उसकी बीवी के	मुक़द्दर कर दिया हमने उसे	पीछे रहने वालों में से	और बरसाई हमने	उन पर

ع 4 14 19

مَّطَرًا ج	فَسَآءَ	مَطَرُ	الْمُنْذَرِيْنَ (58) ع	قُلِ	الْحَمْدُ	لِلّٰهِ	وَسَلٰمٌ
एक बारिश	तो बहुत बुरी थी	बारिश	डराए जाने वालों की	कह दीजिए	सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	और सलाम है

عَلٰى عِبَادِهِ	الَّذِيْنَ	اصْطَفٰى ط	آٰللّٰهُ	خَيْرٌ	اَمَّا	يُشْرِكُوْنَ (59) ط
उसके उन बंदों पर	जिन्हें	उसने चुन लिया	क्या अल्लाह	बेहतर है	या जिन्हें	वो शरीक ठहराते हैं

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION